سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَ
يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَاۤ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ
يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۳﴾

आयत न० 142 से 143

(जब नमाज़ का क़िबला काबे को बनाया गया और यहूदियों का क़िबला बैतुल मुक़द्दस छोड़ दिया गया तो बुरा मान कर) **अब तो** (ये) **बेवक़ूफ़ लोग ज़रूर ही कहेंगे कि इन** (मुसलमानों) **को उन के** (पहले) **क़िबले से** (कि बैतुल मुक़द्दस था) **जिस तरफ़ पहले मुंह करते थे किस बात ने** (दूसरी तरफ़) **बदल दिया, आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि** (चाहे) **पूरब** (हो) **और** (चाहे) **पच्छम** (हो) **सब** (दिशाओं) **का अल्लाह ही मालिक है,** (जब अल्लाह तआ़ला ही मालिक हैं तो जिस दिशा को चाहे क़िबला बनाएं किसी को वजह पूछने का हक़ नहीं और यह ऐतक़ाद ही सीधा रास्ता है लेकिन कुछ लोग बे बात खोजबीन करते फिरा करते हैं मगर) **जिस को अल्लाह तआ़ला ही** (अपनी महरबानी से) **चाहें** (यह) **सीधा रास्ता बता देते हैं(142) और** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मानने वालो) **इसी तरह हमने तुम को ऐसी ही एक उम्मत बना दी है जो** (हर तरह से) **बीच के दर्जे पर है ताकि** (दुनिया के साथ-साथ आख़रत में तुम्हें इ़ज़्ज़त मिले कि) **तुम** (एक बड़े मुक़दमे में जिसमें एक तरफ़ सभी नबी होंगे और दूसरी तरफ़ उन की मुख़ालिफ़ क़ौमें होंगी, उन मुख़ालिफ़) **लोगों के मुक़ाबिले में गवाह बनाए गये हो और** (इ़ज़्ज़त पर इ़ज़्ज़त यह हुई कि) **तुम्हारे** (गवाह और ऐतबार के क़ाबिल होने के लिए) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **गवाह हों** (और उस गवाही से तुम्हारी गवाही की सनद हो फिर तुम्हारी गवाही से उस मुक़दमे का फैसला नबियों के हक़ में हो और गुनाहगार सज़ा पाएं और यह बड़ी इ़ज़्ज़त की बात है), **और** (असल में तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के लिए हम ने काबा ही क़िबला तय कर रक्खा था और) **जिस क़िबले पर आप** (कुछ दिन) **रह चुके हैं** (यानी बैतुल मुक़द्दस) **वो तो सिर्फ़ इसलिए था कि हम को** (खुले तौर पर भी) **पता चल जाए कि** (इसके क़िबला बनाने या बदलने से यहूदियों और दूसरे लोगों में से) **कौन तो रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की बात मानता है और कौन पीछे को हट जाता है, और यह बात थी बड़ी मुश्किल मगर** (उन को नहीं) **जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला ने सीधा रास्ता**

दिखाया है, और (बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ जो नमाज़ें पढ़ीं गईं कोई यह न समझे कि उन में सवाब कम मिलेगा ऐसा नहीं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ऐसे नहीं कि तुम्हारे ईमान** (से जुड़े नमाज़ जैसे अमल के सवाब) **को बर्बाद** (और कम) **कर कर्दे,** (और) **सच यह है कि अल्लाह तआ़ला तो** (ऐसे) **लोगों पर बहुत ही महरबान** (और) **रहम करने वाले हैं** (बस इस लिए अल्लाह का हुक्म मानने से दोनों सूरतों में बराबर सवाब मिलेगा)(143)।

नोटः- यह क़िबला बदलने का हुक्म ईमान का एक इम्तिहान था जिनके ईमान में कमज़ोरी या कमी थी वो इस हुक्म के आने के बाद इस्लाम से फिर गये।

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَ
مَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ
يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

आयत न० 144 से 147

(ऐ पैग़म्बर आप जो दिल से काबा के क़िबला होने की चाहत रखते हैं और वही की उम्मीद में बार-बार आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर भी देखते हैं कि शायद फ़रिशता हुक्म लेकर आजाए तो) **हम आप के मुंह का बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं** (और चूंकि हम आप की ख़ुशी पूरी करना चाहते हैं) **इस लिए** (हम वादा करते हैं कि) **आप का मुंह उसी क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जो आप को पसन्द है,** (लो फिर हम हुक्म ही दिये देते हैं, कि) **अब से अपना चेहरा नमाज़ में ख़ाना काबा की तरफ़ किया कीजिए, और** (यह हुक्म सिर्फ़ आप के लिए ख़ास नहीं बल्कि सब लोग पैग़म्बर भी और उम्मती भी) **जहां कहीं मौजूद हों** (चाहे मदीने में या दूसरी जगह, यहां तक कि ख़ुद बैतुल मुक़द्दस में भी) **अपने चहरों को उसी** (ख़ाना काबा) **की तरफ़ किया करो, और** (इस क़िबले के बारे में) **यह किताब वाले भी** (अपनी किताबों की ख़बर से कि आख़री नबी का

क़िबला इस तरह होगा) **बेशक जानते हैं कि यह हुक्म बिल्कुल सही है** (और) **उनके रब ही की तरफ़ से है** (मगर दुशमनी की वजह से मानते नहीं), **और अल्लाह तआ़ला उससे अन्जान नहीं हैं जो कुछ ये कर रहे हैं(144) और** (उन लोगों के सब कुछ समझने के बावजूद उन की ज़िद की यह हालत थी कि) **अगर आप** (उन) **किताब वालों के सामने सभी** (दुनिया भर के) **सबूत** (जमा करके) **ले आएं जब भी ये** (कभी) **आप के क़िबले को न मानें, और** (उनसे मेल मिलाप की उम्मीद इस लिए नहीं रखनी चाहिए कि आप का क़िबला बदलने वाला नहीं इस लिए) **आप भी उनके क़िबले को नहीं मान सकते** (बस मेल की कोई सूरत नहीं रही), **और** (जैसा इन किताब वालों को आप से ज़िद है उनमें आपस में भी मेल नहीं क्योंकि) **उनमें का कोई भी दूसरे के क़िबले को नहीं मानता** (जैसे यहूदियों ने बैतुल मुक़द्दस ले रक्खा था और ईसाइयों ने पूरब को क़िबला बना रक्खा था), **और** (आप तो किसी तरह उनके क़िबले को ले ही नहीं सकते क्योंकि ख़ुदा न करे) **अगर आप उन की मर्ज़ी पर चलें** (और वो भी) **आप के पास** (सही) **इल्म** (यानी वही) **आने के बाद तो बेशक आप** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **ज़ालिमों में गिने जाने लगें** (और मासूम होने की वजह से आप ज़ालिम हो नहीं सकते इस लिए यह भी नहीं हो सकता कि आप उन के कहने पर चलें)(145) **जिन लोगों को हम ने किताब** (तौरेत व इन्जील) **दी है वो लोग रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह का रसूल होने) **को** (तौरेत व इन्जील में आई हुई ख़ुशख़बरी की वजह से) **ऐसा** (बेशक व बेशुबह) **जानते पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को** (उन की सूरत से) **पहचानते हैं** (कि बेटे की सूरत देख कर कभी शक नहीं होता कि यह कौन आदमी है मगर पहचान कर भी सब मुसलमान नहीं होते बल्कि कुछ तो ईमान ले आए), **और कुछ उन में से** (ऐसे हैं कि) **इस सच्ची बात को अच्छी तरह जानते हैं** (मगर) **छुपाते हैं**(146) (जब कि) **इस बात का असलीयत में अल्लाह की तरफ़ से होना साबित** (हो चुका) **है, तो** (अल्लाह के ऐसे सच्चे हुक्म के बारे में सब को कहा जा सकता है कि) **तू कभी भी शक करने वालों में से न होना**(147)।

وَ لِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِيْرٌ ﴿۱۴۸﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَ مَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۹﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ
لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَ اخْشَوْنِیْ ۗ وَ لِاُتِمَّ نِعْمَتِیْ عَلَيْكُمْ

وَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٥٠ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ وَ يُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَ
الْحِكْمَةَ وَ يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝١٥١ فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِيْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ ۝١٥٢

आयत न० 148 से 152

और (क़िबला बदलने की वजह यह है कि अल्लाह का क़ानून यह है कि) **हर** (मज़हब वाले) **आदमी के वास्ते एक क़िबला रहा है जिस की तरफ़ वो** (इबादत में) **मुंह करता रहा है** (चूंकि हुज़ूर की शरीअ़त भी एक पक्का सच्चा दीन है इस लिए इस का क़िबला भी एक ख़ास हो गया) **तो** (मुसलमानों) **तुम** (अब इस बहस को छोड़ कर अपने दीन के) **नेक कामों में आगे बढ़ने की कोशिश करो,** (क्योंकि एक दिन अपने मालिक के पास जाना है चाहे) **तुम कहीं होंगे** (लेकिन) **अल्लाह तआ़ला तुम सब को** (अपने दरबार में) **हाज़िर कर देंगे** (उस वक़्त नेकियों पर सवाब और बुरे कामों पर अज़ाब होगा, और) **बेशक अल्लाह तआ़ला हर काम पर पूरी क़ुदरत रखते हैं**(148) **और** (जिस तरह वतन में रहते हुए काबे की तरफ़ मुंह होता है उसी तरह) **जिस जगह से भी** (कहीं सफ़र में) **आप बाहर जाएं तो** (भी) **अपना चेहरा** (नमाज़ में) **ख़ाना काबा की तरफ़ रक्खा कीजिए** (यानी वतन में या सफ़र में सब हालतों का ये ही क़िबला है)**, और यह** (क़िबले का आम हुक्म) **बिल्कुल हक़** (और सही) **है** (और) **अल्लाह की तरफ़ से** (है)**, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे किये हुए कामों से ज़रा अन्जान नहीं हैं**(149) **और** (दोबारा फिर कहा जाता है कि) **आप जिस जगह से भी** (सफ़र में) **बाहर जाएं** (और वतन में तो इस की पाबन्दी और ज़्यादा करें कि) **अपना चेहरा** (नमाज़ में) **ख़ाना काबा की तरफ़ रखिए और** (इसी तरह सब मुसलमान भी सुन लें कि) **तुम लोग जहां कहीं** (मौजूद) **हो अपना चेहरा** (नमाज़ में) **उसी** (ख़ाना काबा) **की तरफ़ रक्खा करो** (और यह हुक्म इसलिए दिया जाता है) **ताकि** (इन मुख़ालिफ़) **लोगों को तुम्हारे मुक़ाबिले में** (यह) **बात** (कहने की हिम्मत) **न रहे** (कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वो आख़री नबी होते जिन की निशानी यह है कि उन का असली क़िबला काबा होगा और ये तो बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं यह तीसरी वजह है क़िबला बदलने की, हां) **मगर उन में जो** (बिल्कुल ही) **बेइन्साफ़ हैं** (वो अब भी हटधर्मी करेंगे कि ये कैसे नबी हैं जो इतने नबियों के ख़िलाफ़ काबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन जब ऐसे ऐतराज़ों से सच्चे दीन को कोई नुक़सान नहीं पहुचं सकता) **तो ऐसे लोगों से** (ज़रा) **न डरो** (और उनके ऐतराज़ों के जवाब की फ़िक्र में मत पड़ो) **और मुझसे ड़रते रहो** (कि मेरे हुक्मों की मुख़ालफ़त न होने पाए)**, और** (हमने इन हुक्मों पर चलने की तौफ़ीक़ दी)

ताकि तुम पर जो (कुछ) **मेरा इनआ़म** (इकराम) **है** (तुम को आख़िरत में जन्नत में दाख़िल करके) **उस को पूरा कर दूं और ताकि** (दुनिया में) **तुम सीधे रास्ते पर** (यानी इस्लाम पर) **रहो**(150) (हमने काबे को क़िबला बना कर हज़रत इब्राहीम की एक दुआ़ जो उन्होंने काबा बनाने के वक़्त की थी इस तरह कुबूल की) **जिस तरह** (उन की दूसरी दुआ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बना कर भेजने की कुबूल की, कि) **तुम लोगों में हमने एक** (बड़ी शान के) **रसूल को भेजा** (जो कि) **तुम ही में से** (हैं और वो) **हमारी आयतों** (और हुक्मों) **को पढ़ पढ़ कर तुम को सुनाते हैं और** (जहालत की बातों से) **तुम्हारी सफ़ाई करते रहते हैं और तुम को** (ऐसे नफ़े की) **बातें सिखाते हैं जिन की तुम को ख़बर भी न थी** (और इस शान के रसूल भेजने की इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ़ की थी जो पूरी हुई)(151) **इस लिए** (इन नेमतों के मिलने पर) **मुझ को याद करो मैं तुम को** (महरबानी से) **याद रक्खूंगा और** (मेरी नेमतों का) **शुक्र करो और** (नेमतों का इनकार करके या नाफ़रमानी से) **मेरी नाशुक्री मत करो**(152)।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ
الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۱۵۶﴾
اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ ۫ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

आयत न० 153 से 157

नोटः- मुख़ालिफ़ों की तरफ़ से इस्लाम पर किये गये ऐतराज़ों की वजह से मुसलमानों को दुख होता था तो उस ग़म को कम करने का तरीक़ा बताया जाता है कि-

ऐ ईमान वालो (दिलों में ग़म हल्का करने के बारे में) **सब्र और नमाज़ से सहारा** (और मदद) **लो, बेशक अल्लाह तआ़ला** (हर तरह से) **सब्र करने वालों के साथ रहते हैं** (जब सब्र में यह वादा है तो नमाज़ जो इससे बढ़ कर है उस में तो और भी बड़ी ख़ुशख़बरी होगी)(153) **और जो लोग अल्लाह के रास्ते में** (यानी दीन के वास्ते) **क़त्ल किये जाते हैं उन** (का दर्जा ऐसा है कि उन) **के बारे में यह भी मत कहो कि वो** (आम मुर्दों की तरह) **मुर्दे हैं, बल्कि वो** (एक अलग ज़िन्दगी के साथ) **ज़िन्दा हैं लेकिन तुम** (उन की ज़िन्दगी को) **समझ नहीं सकते**(154) **और** (देखो)

हम (तुम्हारे ईमान को जांचने के लिए) **तुम्हें आज़माऐंगें थोड़े डर से** (जो कि दुशमनों की तरफ़ से या मुसीबतों के पड़ने से पेश आए) **और** (कुछ) **माल और जान और फलों की कमी से** (जैसे जानवर मर गये या कोई आदमी मर गया या बीमार हो गया या फल और खेती की पैदावार घट गई बस तुम सब्र करना), **और** (जो लोग इन इम्तिहानों में पूरे उतरें और जमे रहें तो) **आप ऐसे सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए(155)** (जिन की यह आ़दत है) **कि उन पर जब कोई मुसीबत पड़ती है तो वो** (दिल से समझ कर यूं) **कहते हैं कि हम तो** (माल और जान के साथ सचमुच) **अल्लाह तआ़ला ही की चीज़ हैं** (और सच्चे मालिक का अपनी चीज़ पर हर तरह से हक़ है) **और हम सब** (दुनिया से) **अल्लाह तआ़ला ही के पास जाने वाले हैं** (तो यहां के नुक़सानों का बदला वहां जाकर मिल जाएगा)(156) **उन लोगों पर** (अलग-अलग) **ख़ास-ख़ास रहमतें भी उन के रब की तरफ़ से होंगी और** (सब पर) **आम रहमत भी होगी, और ये ही लोग हैं जो** (सच्चाई की) **राह पा** (गये और अल्लाह तआ़ला को मालिक और नुक़सान का बदला देने वाला जान) **गये(157)।**

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَن تَطَوَّعَ
خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ
فِي الْكِتَابِ ۙ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ
عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿١٦٢﴾

आयत न० 158 से 162

नोटः- सफ़ा व मरवा दो पहाड़ी हैं जिन के बीच में दौड़ना होता है जिस को सई कहते हैं और जहालत के ज़माने में उन पहाड़ियों पर कुछ मूर्तियां रख दी गईं थी इस लिए कुछ मुसलमानों को सई के बारे में शक हुआ कि यह गुनाह न हो तो इसके बारे में कहते हैं कि-

(सफ़ा मरवा की सई में कोई शक न करो क्योंकि) **बेशक सफ़ा और मरवा** (और उनके बीच में सई करना) **अल्लाह** (के दीन) **की निशानियों में से है, इसलिए जो आदमी हज करे अल्लाह के**

घर का या (उस का) **उमराः करे उस पर ज़रा भी गुनाह नहीं** (जैसा तुम को शक हो गया) **इन दोनों के बीच** (बताए हुए तरीक़े से) **सई करने में** (गुनाह क्या बल्कि सवाब होता है क्योंकि यह सई तो नेकी का काम है)**, और** (हमारे यहां का क़ानून है कि) **जो आदमी ख़ुशी से कोई नेक काम करे तो अल्लाह तआ़ला** (उस की बड़ी) **क़द्र करते हैं** (और उस नेकी करने वाले की नीयत को) **अच्छी तरह जानते हैं** (बस उस की नीयत के मुवाफ़िक़ उस को सवाब मिलेगा)(158) **बेशक जो लोग उन हुक्मों को छुपाते हैं जिन को हमने उतारा है जो कि** (अपने आप में) **साफ़ हैं और** (दूसरों के लिए) **रास्ता दिखाने वाले हैं और** (छुपाते भी) **इस** (हालत) **के बाद कि हम उन** (हुक्मों) **को** (अल्लाह की) **किताब** (तौरेत व इन्जील) **में** (उतार कर) **आम लोगों पर खोल चुके हों ऐसे लोगों पर अल्लाह तआ़ला भी लानत करते हैं** (कि अपनी ख़ास रहमत से उन को दूर कर देते हैं) **और** (दूसरे बहुत से) **लानत करने वाले भी** (जिन को इस काम से नफ़रत है) **उन पर लानत भेजते** (हैं कि उन पर बद्दुआ़ करते) **हैं**(159) **मगर जो लोग** (अपनी ग़लती से) **तौबा करलें और** (जो कुछ उनके इस काम से ख़राबी हो गई थी उस को) **सुधार लें और** (सुधार का तरीक़ा यह है कि उन छुपाई हुई बातों को आम लोगों के सामने) **खोल दें** (ताकि सब को पता हो जाए और ईमान ले आएं) **तो मैं ऐसे लोगों की तौबा क़ुबूल कर लेता हूं** (और उन की ग़लती मुआ़फ़ कर देता हूं) **और मेरी तो आदत ही तौबा क़ुबूल कर लेना और महरबानी करना है** (कोई तौबा करने वाला होना चाहिए)(160) **लेकिन जो लोग** (उनमें से) **इस्लाम न लाएं और कुफ़्र पर ही मर जाएं ऐसे लोगों पर** (वो) **लानत अल्लाह तआ़ला की और फ़रिशतों और आदमियों की भी सब की होगी**(161) (और) **वो सदा-सदा को उसी** (लानत) **में रहेंगे** (यानी वो दोज़ख़ में सदा के लिए दाख़िल होंगे इस तरह सदा ही ख़ुदा की ख़ास रहमत से भी दूर रहेंगे, और) **उन** (पर) **से** (दोज़ख़ का) **अ़ज़ाब हल्का** (भी) **न होने पाएगा और और न** (दाख़िल होने से पहले) **उन को** (कोई) **मोहलत दी जाएगी** (क्योंकि मोहलत उस वक़्त दी जाती है जब कि मुक़द्दमा सुनने के क़ाबिल हो वरना पहली ही पेशी में सज़ा का हुक्म हो जाता है)(162)

नोटः- यहां यह बात मालूम हुई कि जिस इल्म को खोलने और फैलाने की ज़रूरत हो उस को छुपाना हराम है। लेकिन जिस को ख़ुद सही इल्म न हो उस को मसअले बयान करने की हिम्मत न करना चाहिए और जिन बातों की आम लोगों को ज़रूरत नहीं उन को आम लोगों से बयान करना बेहतर नहीं।

وَ اِلٰـهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحۡمٰنُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۶۳﴾ اِنَّ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ
وَالۡفُلۡكِ الَّتِىۡ تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِمَا يَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ
مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ وَّتَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶۴﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اَنۡدَادًا يُّحِبُّوۡنَهُمۡ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا
اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوۡ يَرَى الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡۤا اِذۡ يَرَوۡنَ الۡعَذَابَ ۙ اَنَّ الۡقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيۡعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيۡدُ الۡعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾
اِذۡ تَبَرَّاَ الَّذِيۡنَ اتُّبِعُوۡا مِنَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا وَرَاَوُا الۡعَذَابَ وَتَقَطَّعَتۡ بِهِمُ الۡاَسۡبَابُ ﴿۱۶۶﴾ وَقَالَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا لَوۡ
اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنۡهُمۡ كَمَا تَبَرَّءُوۡا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيۡهِمُ اللّٰهُ اَعۡمَالَهُمۡ حَسَرٰتٍ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَمَا هُمۡ
بِخٰرِجِيۡنَ مِنَ النَّارِ ﴿۱۶۷﴾

आयत न० 163 से 167

नोटः- अ़रब के मुशरिकों ने जो यह बात कि "सब का ख़ुदा एक ही है" अपने अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ सुनी तो अचम्भे से कहने लगे कि कहीं सारी दुनिया का एक ख़ुदा भी हो सकता है और यह दावा सही है तो कोई सबूत पेश करना चाहिए। अल्लाह तआ़ला आगे सबूत बयान करते हैं-

और (ऐसा ख़ुदा) **जो सब के माबूद बनने का हक़दार है वो तो एक ही** (सच्चा) **माबूद है उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वो ही सब से बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है** (और कोई उस जैसा नहीं)(163) **बेशक आसमानों के और ज़मीन के बनाने में और एक के बाद दूसरे रात और दिन के आने में और जहाज़ों** (के चलने) **में जो कि समन्दर में चलते हैं लोगों के नफ़े की चीज़ें** (और सामान) **लेकर और** (बारिश के) **पानी में जिस को अल्लाह तआ़ला ने आसमान से बरसाया फिर उस** (पानी) **से ज़मीन को हरा भरा किया उस के सूखने के बाद** (यानी उसमें पेड़ पौधे पैदा किये) **और** (इन पौधों से) **हर क़िस्म के जानवर उस** (ज़मीन) **में फैला दिये** (क्योंकि जानवरों की ज़िन्दगी का मदार यानी उन की ख़ुराक पेड़ पौधे हैं)**, और हवाओं के** (रूख़ और हालतें) **बदलने में** (कि कभी पर्वा है कभी पछवा कभी गर्म है कभी ठन्डी) **और बादल** (के वजूद) **में जो ज़मीन व आसमान के बीच में रहता है** (इन सभी चीज़ों में अल्लाह तआ़ला के वजूद और एक होने के) **सबूत** (मौजूद) **हैं उन लोगों के वास्ते जो** (सही) **समझ रखते हैं**(164) **और कुछ लोग वो** (भी) **हैं जो अल्लाह**

तआ़ला के सिवा दूसरों को भी (उस का) **साझी ठहराते हैं** (और उन को अपना काम बनाने वाला समझते हैं और) **उन से ऐसी मुहब्ब्त रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह तआ़ला से** (रखना) **ज़रूरी** (है यह हालत तो मुशरिकों की) **है, और जो मोमिन हैं उन को** (सिर्फ़) **अल्लाह तआ़ला के साथ बहुत ज़्यादा मुहब्बत है** (क्योंकि अगर किसी मुशरिक को यह पता चल जाए कि मेरे माबूद से मुझ को नुक़सान पहुंचेगा तो फ़ौरन मुहब्बत टूट जाए और मोमिन इसके बावजूद कि नफ़े नुक़सान का मालिक अल्लाह ही को ऐतक़ाद करता है फिर भी मुहब्बत उस की बाक़ी रहती है ऐसे ही मुशरिक मुसीबत के वक़्त अपने माबूदों को छोड़ देते हैं और मोमिन मुसीबत में भी अपने अल्लाह को नहीं छोड़ता), **और क्या अच्छा होता अगर ये ज़ालिम** (मुशरिक) **जब** (दुनिया में) **किसी मुसीबत को देखते तो** (उस को सोच कर) **यह समझ लिया करते कि सब ताक़त अल्लाह तआ़ला ही को है** (और दूसरे उसके सामने मजबूर हैं बस उस मुसीबत को न कोई रोक सका न टाल सका और न ऐसे वक़्त में और कोई याद रहा) **और** (उस मुसीबत की सख़्ती को सोच कर) **यह** (समझ लिया करते कि) **अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब** (आख़रत में कि वो बदले की जगह है और भी) **सख़्त होगा** (तो इस तरह सोच कर घड़े हुए माबूदों की मजबूरी और अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत व बड़ाई समझ कर ईमान ले आते)(165) **जब** (इन मुशरिकों में से) **वो** (बड़े) **लोग जिन के कहने पर दूसरे** (आम लोग) **चलते थे उन** (आ़म) **लोगों से साफ़ अलग हो जाएंगे जो उन के कहने पर चलते थे और सब** (लोग उस) **अ़ज़ाब को देख लेंगे और आपस में इनमें जो मेल जोल थे उस वक़्त सब टूट जाएंगे** (जैसे दुनिया में भी देखा जाता है कि जुर्म में सब साझी और एक साथ होते हैं और मुक़द्दमे के वक़्त सब अलग-अलग बचना चाहते हैं यहां तक कि एक दूसरे को पहचानने से भी इनकार कर देते हैं तो उस वक़्त उस अज़ाब की सख़्ती पता चलेगी)(166) **और** (जब) **ये पीछे चलने वाले लोग** (अपने बड़ों की आंख फिरी देखेंगे तो बड़े झुंझलाएंगे और तो कुछ न हो सकेगा मगर झल्लाकर) **यह कहने लगेंगे किसी तरह हम सब को** (दुनिया में) **बस ज़रा एक बार जाना मिल जाए तो हम भी उन से** (इतना बदला लेलें कि अगर ये कफिर हम को बहकाएं तो हम भी उन से) **साफ़** (टका सा जवाब देकर) **अलग हो जाएं जैसा ये हम से** (इस वक़्त) **साफ़ अलग-अलग हो बैठे** (लेकिन अब कुछ हाथ न आएगा), **अल्लाह तआ़ला ऐसे ही उन के बुरे कामों को पछतावा बना करके उन को दिखाएंगे, और उन** (पीछे चलने वालों व चलाने वालों सब) **को दोज़ख़ से निकलना कभी नसीब न होगा** (क्योंकि शिर्क की सज़ा दोज़ख़ में सदा रहना है)(167)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾ اِنَّمَا
يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ الْفَحْشَآءِ وَ اَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا
بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّ نِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۱۷۲﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ
وَ الدَّمَ وَ لَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۷۳﴾

आयत न० 168 से 173

नोटः- कुछ मुशरिक बुतों के नाम पर जानवर छोड़ते थे और उन से नफ़ा उठाने को ऐतक़ाद से हराम समझते थे और अपने इस काम को अल्लाह को ख़ुश करने का सामान समझते थे अल्लाह तआला इस बारे में कहते हैं कि-

ऐ लोगों! जो चीज़ें ज़मीन में मौजूद हैं उन में से (शरीअ़त की रू से) **हलाल पाक चीज़ों** (के बारे में इजाज़त है कि उन) **को खाओ** (बरतो) **और** (उन को हराम मान कर) **शैतान के तरीक़े पर मत चलो, सचमुच वो** (शैतान) **तुम्हारा खुला दुशमन** (है कि ऐसी जहालत की बातें तुम को सिखाता) **है।**(168) (और) **वो** (दुशमन होने की वजह से) **तुम को वो बातें ही सिखाएगा जो कि** (शरीअ़त से) **बुरी और गन्दी हैं और यह** (भी सिखाएगा) **कि अल्लाह के ज़िम्मे वो बातें लगाओ जिन की तुम सनद भी नहीं रखते** (जैसे ये ही कि हम को अल्लाह तआ़ला का इस तरह हुक्म है)(169) **और जब कोई इन** (मुशरिक) **लोगों से कहता है कि अल्लाह तआ़ला ने जो हुक्म** (अपने पैग़म्बर के पास) **भेजा है उस पर चलो तो** (जवाब में) **कहते हैं** (कि नहीं) **बल्कि हम तो उसी** (तरीक़े) **पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, क्या** (हर हालत में ये लोग अपने बाप दादा ही के तरीक़े पर चलेंगे) **चाहे उन के बाप दादा** (दीन की) **न कुछ समझ रखते हों और न** (आसमानी किताब की) **हिदायत रखते हों**(170) **और इन काफ़िरों की हालत** (नासमझी में) **उस** (जानवर) **की हालत जैसी है** (जैसे) **कि एक आदमी है वो ऐसे** (जानवर) **के पीछे चिल्ला रहा है जो सिवाए बुलाने और पुकारने के कोई** (काम की) **बात नहीं सुनता,** (इसी

तरह) **ये काफ़िर** (भी वैसी बात चीत तो सुनते हैं लेकिन काम की बात से बिल्कुल) **बहरे हैं** (जैसे सुना ही नहीं) **गूंगे हैं** (कि कभी ऐसी बात ज़बान पर नहीं आती) **अन्धे हैं** (क्योंकि नफ़ा नुक़सान दिखाई ही नहीं देता) **तो** (जब ऐसे हैं तो) **समझते** (समझाते) **कुछ नहीं**(171) **ऐ ईमान वालो** (हमारी तरफ़ से तुम को इजाज़त है कि) **जो** (शरीअ़त की रू से) **पाक चीज़ें हमने तुम को दी हैं उन में से** (जो चाहो) **खाओ** (बरतो) **और** (इस इजाज़त के साथ यह हुक्म है कि) **अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो** (ज़बान से भी ताबेदारी करके भी और दिल से इन नेमतों को अल्लाह की तरफ़ से समझ कर भी) **अगर तुम ख़ास उसी के बन्दे हो** (और ये सब जानते हैं कि उसी के बन्दे हैं तो शुक्र भी ज़रूरी है)(172) **अल्लाह तआ़ला ने तुम पर** (उन चीज़ों को हराम नहीं किया जिन को तुम अपनी तरफ़ से हराम कर रहे हो बल्कि) **सिर्फ़** (इन चीज़ों को) **हराम किया है** (यानी) **मुरदार** (जानवर) **को** (जो हलाल जानवरों में से हो और ज़बह किये बिना मर जाए) **और ख़ून को** (जो बहता हो) **और सुअर के गोश्त को** (इसी तरह उस के सब हिस्सों को भी) **और ऐसे जानवर को जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को** (खुश करने के इरादे से) **नामज़द किया गया हो** (इन सब को बेशक हराम किया है) **फिर भी** (इसमें इतनी आसानी रक्खी है कि) **जो आदमी** (भूक से बहुत ही) **बेचैन हो जाए शर्त यह है कि न तो** (खाने में) **मज़ा चाहता हो और न** (ज़रूरत से) **आगे बढ़ने वाला हो तो** (इस हालत में इन चीज़ों से खाने में भी) **उस आदमी पर कुछ गुनाह नहीं होता, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े बख़्शने वाले रहमत वाले हैं** (कि ऐसे वक़्त में यह रहमत की कि गुनाह की चीज़ में भी गुनाह उठा दिया)(173)।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ
اِلَّا النَّارَ وَ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَ لَا يُزَكِّيْهِمْ ۖ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا
الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَ الْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ؕ وَ
اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ
الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ
ذَوِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَ السَّآئِلِيْنَ وَ فِي الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى
الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ

الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝

आयत न० 174 से 177

नोटः- यहूदियों के बहुत से आलिम रिशवत लेकर शरीअत के ख़िलाफ़ लोगों की मर्ज़ी के फ़तवे देते थे इस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के आ़लिमों को समझाया गया कि इससे बचें।

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग अल्लाह तआ़ला की भेजी हुई किताब (के हुक्मों) **को छुपाते हैं और इस** (दग़ा बाज़ी) **के बदले में** (दुनिया का) **थोड़ा सा माल ले लेते हैं ऐसे लोग और कुछ नहीं अपने पेट में आग** (के अंगारे) **भर रहे हैं और अल्लाह तआ़ला उन से न तो क़ियामत में** (महरबानी के साथ) **बात करेंगे और न** (गुनाह मुआ़फ़ करके) **उन की सफ़ाई करेंगे, और उन को दर्दनाक सज़ा होगी(174) ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने** (दुनिया में तो) **हिदायत छोड़ कर गुमराही ली और** (आख़रत में) **बख़्शिश छोड़ कर अ़ज़ाब** (सर पर लिया), **तो** (शाबाश है उन की हिम्मत को) **दोज़ख़** (में जाने) **के लिए कैसे हिम्मत वाले हैं(175)** (और) **ये सारी सज़ाएं** (उन को) **इस वजह से हैं कि अल्लाह तआ़ला ने** (उस) **किताब को ठीक ठीक भेजा था, और जो लोग** (ऐसी ठीक-ठीक भेजी हुई) **किताब के ख़िलाफ़ चलें बेशक वो नाफ़रमानी** (और गुमराही) **में बहुत दूर निकल गये(176) कुछ सारा कमाल इसमें नहीं** (आगया) **कि तुम अपना मुंह पूरब को कर लो या पच्छम को** (करलो) **लेकिन** (असली) **कमाल तो यह है कि कोई आदमी अल्लाह तआ़ला** (की हस्ती व ख़ूबियों) **पर यक़ीन रक्खे और** (इसी तरह) **क़ियामत के दिन** (के आने) **पर** (भी) **और फ़रिशतों पर** (भी कि वो अल्लाह के ताबेदार बन्दे हैं नूर से बने हैं गुनाहों से पाक खाने पीने और इन्सानी जरूरतों से पाक हैं) **और** (सब आसमानी) **किताबों पर** (भी) **और** (सब) **नबियों पर** (भी), **और** (वो आदमी) **माल देता हो अल्लाह की मुहब्बत में** (अपने ज़रूरत मन्द) **रिशतेदारों को और** (ग़रीब) **यतीमों को** (यानी जिन छोटे बच्चों का बाप मर गया हो) **और** (दूसरे ग़रीब) **ज़रूरतमन्दों को** (भी) **और** (ख़र्च से परेशान) **मुसाफ़िरों को और** (मजबूरी में) **मांगने वालों को और** (क़ैदी और गुलामों को) **आज़ाद कराने में** (भी माल ख़र्च करता हो), **और** (वो आदमी) **नमाज़ की पाबन्दी** (भी) **रखता हो और ज़कात भी अदा करता हो, और जो लोग** (इन अ़क़ीदों व नेक कामों के साथ) **अपने वादों को पूरा करने वाले हों जब** (किसी जाइज़ काम का) **वादा करलें, और वो लोग** (इन मौक़ों में) **सब्र करने वाले हों** (एक तो) **ग़रीबी में और** (दूसरे) **बीमारी में**

और (तीसरे) **जंग के वक़्त में** (यानी परीशान और कम हिम्मत न हों, बस) **ये लोग सच्चे** (मोमिन कहलाने के हक़दार) **हैं, और ये लोग ही** (सच्चे) **परहेज़गार** (कहे जा सकते) **हैं**(177)

नोटः- असल चीज़ अक़ीदों और आमाल का सही होना है और जिस तरफ़ का भी हुक्म हो उधर ही को नमाज़ पढ़ने में ताबेदारी है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ
عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ
اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۷۸﴾ وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

आयत न० 178 से 179

ऐ ईमान वालों तुम पर (क़ानून) **बदला लेने का फ़र्ज़ किया जाता है** (इरादे से) **क़त्ल किये गये लोगों के बारे में,** (यानी हर) **आज़ाद** (क़ातिल) **आदमी** (क़त्ल किया जाए हर दूसरे) **आज़ाद आदमी के बदले में और** (इसी तरह हर क़ातिल) **गुलाम** (दूसरे हर) **गुलाम के बदले में और** (इसी तरह हर क़ातिल) **औरत** (दूसरी हर) **औरत के बदले में** (चाहे ये क़ातिल बड़े दर्जे के और क़त्ल होने वाले छोटे दर्जे के हों जब भी सब से बराबर बदला लिया जाएगा यानी क़ातिल को ही सज़ा में क़त्ल किया जाएगा किसी दूसरे को उस के बदले क़त्ल की सज़ा न दी जाएगी), **हां जिस** (क़ातिल) **को उस के** (मुक़दमे के) **फ़रीक़ की तरफ़ से कुछ मुआफ़ी हो जाए** (मगर पूरी मुआफ़ी न हो) **तो** (क़त्ल की सज़ा से तो बरी हो गया लेकिन ख़ूं बहा यानी जुर्माना क़ातिल के ज़िम्मे होगा जो तय किया हुआ है तो उस वक़्त दोनों फ़रीक़ दो बातों का ध्यान रक्खें कि मरने वाले के वारिस तो) **अच्छे तरीक़े से** (उस माल की) **मांग करें** (कि उस को ज़्यादा तंग न करें) **और** (क़ातिल के ज़िम्मे) **अच्छे तरीक़े से** (उस माल का) **उस** (मरने वाले के वारिसों) **के पास पहुंचा देना** (कि न कमी करे और न बेबात टाले), **यह** (जुर्माने और मुआफ़ी का क़ानून) **तुम्हारे रब की तरफ़ से** (सज़ा में) **कमी है और** (शाही) **महरबानी है** (वर्ना सिवाए सज़ाए मौत के कोई गुन्जाइश ही न होती), **फिर जो इस** (क़ानून) **के** (बनाए जाने के) **बाद हद से बढ़े** (जैसे किसी पर झूटा या शक में क़त्ल का दावा करे या मुआफ़ करके फिर क़त्ल का मुक़दमा करे) **तो ऐसे आदमी को** (आख़रत में) **बड़ा दर्दनाक अ़ज़ाब होगा**(178) **और ऐ समझदार लोगो** (इस) **बदला लेने** (के क़ानून) **में तुम्हारी जानों का बड़ा बचाव है** (क्योंकि इस क़ानून के डर से क़त्ल करने से डरेंगे तो बहुत सी जानें बचेंगी) **हम उम्मीद करते हैं कि तुम लोग** (ऐसे अमन के क़ानून के ख़िलाफ़ करने से) **बचोगे**(179)।

नोटः- क़ातिल से लिया जाने वाला जुर्माना 35 किलो चान्दी की क़ीमत के बराबर माल है जो क़त्ल होने वाले के वारिसों को क़ातिल की तरफ़ से दिलाया जाएगा।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾ فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾ فَمَنْ
خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾

आयत न० 180 से 182

तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब किसी को मौत के आसार दिखाई देने लगें शर्त यह है कि कुछ माल छोड़ा हो तो (अपने) **मां बाप और** (दूसरे) **रिश्तेदारों के लिए कुछ वसीयत कर जाए** (जो सब मिला कर एक तिहाई से ज़्यादा न हो) **जिन को अल्लाह का डर है उनके लिए यह ज़रूरी है(180) फिर** (जिन लोगों ने इस वसीयत को सुना है उनमें से) **जो आदमी** (भी) **सुन लेने के बाद इस** (वसीयत की बात) **को बदलेगा** (जिससे किसी का हक़ मारा जाए) **तो उस** (हक़ मारने) **का गुनाह उन ही लोगों को होगा जो उस** (की बात) **को बदलेंगे,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला तो बेशक सुनते जानते हैं(181) हां** (एक तरह से बदलने की इजाज़त भी है वो यह कि) **जिस आदमी को वसीयत करने वाले की तरफ़ से** (वसीयत के बारे में) **किसी ग़लती या किसी गुनाह का पता चले फिर यह आदमी उनमें आपस में समझौता करादे** (चाहे उस समझौते से असल वसीयत बदल जाए) **तो उस आदमी पर कोई गुनाह** (का बोझ) **नहीं है,** (और) **बेशक अल्लाह तआ़ला तो** (ख़ुद गुनाहों के) **मुआफ़ करने वाले और रहमत करने वाले हैं** (और उस आदमी ने तो कोई गुनाह नहीं किया क्योंकि वसीयत तो सुधार के लिए बदली गई है तो उस पर क्यों न रहमत होगी)(182)।

नोटः- मीरास का हुक्म आने के बाद यह हुक्म बदल गया यानी वसीयत करना ज़रूरी नहीं रहा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾ اَيَّامًا
مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ
طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٤﴾ شَهْرُ

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِىٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ
فَلْيَصُمْهُ ؕ وَ مَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَ لَا يُرِيْدُ بِكُمُ
الْعُسْرَ ۫ وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

आयत न० 183 से 185

ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जिस तरह तुम से पहले (उम्मतों के) **लोगों पर फ़र्ज़ किया गया था इस उम्मीद पर कि तुम** (धीरे-धीरे) **परहेज़गार बन जाओ** (क्योंकि रोज़ा रखने से जी को थामने की आ़दत पड़ेगी और यह आदत ही परहेज़गारी की बुनियाद है)(183) **सो थोड़े दिन रोज़ा रख लिया करो** (इन थोड़े दिनों से मुराद रमज़ान है जैसा कि अगली आयत में आता है), **फिर** (इसमें भी इतनी आसानी है कि) **जो आदमी तुम में** (ऐसा) **बीमार हो** (जिस को रोज़ा रखना मुश्किल हो या नुक़सान देता हो) **या** (शरीअ़त की रू से) **सफ़र में हो तो** (उस को रमज़ान में रोज़ा न रखने की इजाज़त है, और बजाए रमज़ान के) **दूसरे दिनों की** (इतनी ही) **गिनती** (करके उसमें रोज़ा रखना उस पर वाजिब) **है, और** (दूसरी आसानी जो बाद में बदल दी गई यह है कि) **जो लोग रोज़े की ताक़त रखते हों** (और फिर रोज़ा रखने को दिल न चाहे तो) **उनके ज़िम्मे सिर्फ़ रोज़े का फ़िदया** (यानी बदला) **है कि वो एक ग़रीब को खाना** (खिला) **देना** (या दे देना) **है, और जो आदमी ख़ुशी से** (ज़्यादा) **ख़ैर** (ख़ैरात) **करे** (कि ज़्यादा फ़िदया देदे) **तो यह उस आदमी के लिए और अच्छा है, और** (यूं तो हम ने आसानी के लिए इन हालतों में रोज़ा न रखने की इजाज़त दे दी है लेकिन) **तुम्हारा रोज़ा रखना** (इस हालत में भी) **ज़्यादा अच्छा है अगर तुम** (कुछ रोज़े के सवाब की) **ख़बर रखते हो**(184) (और वो थोड़े दिन जिन में रोज़ा रखने का हुक्म हुआ है) **रमज़ान का महीना है जिसमें** (ऐसी बरकत है कि इसके एक ख़ास हिस्से यानी शबे क़द्र में) **क़ुरआन मजीद** (लोहे महफ़ूज़ से दुनिया के आसमान पर) **भेजा गया है जिस की** (एक) **ख़ूबी यह है कि** (यह) **लोगों के लिए हिदायत है और** (दूसरी ख़ूबी यह है कि हिदायत के तरीक़े बताने में इसका हर-हर हिस्सा) **खुली दलील है** (और) **उन** (आसमानी) **किताबों में से है** (जो कि) **हिदायत** (भी) **हैं और** (खुली दलील होने की वजहसे सच और झूट के बीच) **फ़ैसला करने वाली** (भी) **हैं, तो जो आदमी इस महीने में मौजूद हो उस को ज़रूर इसमें रोज़ा रखना चाहिए** (और फ़िदये की इजाज़त जो ऊपर बताई गई थी बदल दी गई), **और** (बीमार और मुसाफ़िर के लिए जो ऊपर क़ानून था वो मगर अब भी उसी तरह बाक़ी है कि) **जो आदमी** (ऐसा) **बीमार हो** (जिसमें रोज़ा

रखना मुश्किल हो या नुक़सान देता हो) **या** (शरीअ़त की रू से) **सफ़र में हो तो** (उस को रमज़ान में रोज़ा न रखने की इजाज़त है और रमज़ान के दिनों के बजाए) **दूसरे दिनों की** (उतनी ही) **गिनती करके** (उसमें रोज़ा) **रखना** (उस पर वाजिब) **है, अल्लाह तआ़ला हुक्मों में तुम्हारे साथ आसानी करना चाहते हैं** (इस लिए ऐसे हुक्म दिये जिन को तुम आसानी से पूरा कर सको जैसे सफ़र और बीमारी में कैसा क़ानून बना दिया) **और तुम्हारे साथ** (हुक्मों और क़ानूनों में मुश्किल व) **सख़्ती नहीं चाहते** (कि सख़्त हुक्म दिये जाते)**, और** (पहला हुक्म रोज़ा रखने का और मजबूरी में क़ज़ा रखने का इसलिए किया) **ताकि तुम लोग** (रोज़ों की) **गिनती पूरी कर लिया करो** (ताकि सवाब में कमी न रहे) **और** (ख़ुद क़ज़ा रखने का हुक्म इस लिए किया) **ताकि तुम लोग अल्लाह तआ़ला की बड़ाई** (और सना) **बयान किया करो इस पर कि तुम को** (एक ऐसा) **तरीक़ा बता दिया** (जिससे तुम रोज़े की बरकतों का नफ़ा उठा सको वर्ना अगर क़ज़ा रखना वाजिब न होता तो कौन इतने रोज़े रख कर सवाब कमाता) **और** (मजबूरी में ख़ास रमज़ान में रोज़ा न रखने की इजाज़त इसलिए देदी) **ताकि तुम लोग** (इस आसानी की नेमत पर अल्लाह तआ़ला का) **शुक्र अदा किया करो** (वर्ना अगर यह इजाज़त न होती तो बहुत तकलीफ़ हो जाती)(185)।

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَاِنِّىْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِىْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِىْ
لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿١٨٦﴾

आयत न० 186

और (ऐ पैग़म्बर) **जब आप से मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें** (कि मैं उनके पास हूं या दूर) **तो** (मेरी तरफ़ से उन से कह दीजिए कि) **मैं पास ही हूं,** (और) **क़ुबूल कर लेता हूं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ को जब वो मुझ से** (सही) **दुआ़ मांगे तो** (जिस तरह मैं उन की दुआ़ को मन्जूर कर लेता हूं) **उन को चाहिए कि मेरे हुक्मों को मानें और मुझ पर यक़ीन रक्खें** (यानी मेरी हस्ती पर भी मेरे हाकिम होने पर भी इस तरह) **उम्मीद है कि वो लोग सही रास्ता** (और कामयाबी) **पाजाएंगे**(186)।

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَ اَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ
تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۠ وَ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا

حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَ لَا
تُبَاشِرُوْهُنَّ وَ اَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝۱۸۷ وَ لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَاۤ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ
النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۱۸۸ ع

आयत न० 187 से 188

नोटः- इस आयत में रोज़े के कुछ बाक़ी हुक्म बयान हुए हैं।

तुम लोगों के वास्ते रोज़े की रात में अपनी बीवियों से मिलाप करना हलाल कर दिया गया (और पहले जो इस पर पाबन्दी थी हटा दी गई), **क्योंकि** (नज़दीकी और मेल जोल की वजह से) **वो तुम्हारे लिए लिबास** (की तरह) **हैं और तुम उनके लिए लिबास** (की तरह) **हो, अल्लाह तआ़ला को इस की ख़बर थी कि तुम** (अल्लाह के इस हुक्म में) **नाफ़रमानी** (कर) **के गुनाह में अपने को डाल रहे थे** (मगर) **अच्छा** (जब तुम मुआ़फ़ी चाहते हो तो) **अल्लाह तआ़ला ने तुम पर महरबानी की और तुम को मुआ़फ़ कर दिया, तो** (जब इजाज़त हो गई तो) **अब उनसे मिलाप करो और जो** (इजाज़त व क़ानून) **तुम्हारे लिए रख दिया है** (बेझिजक) **उस का सामान करो, और** (यह भी इजाज़त है कि पूरी रात में जब चाहो) **खाओ** (भी) **और पियो** (भी) **उस वक़्त तक कि तुम को सुबह की सफ़ेद धारी काली धारी से अलग दिखाई देने लगे** (यानी सुबह सादिक़ का यक़ीन हो जाए) **तो फिर** (सुबह सादिक़ यानी पसर से) **रात** (आने यानी दिन छिपने) **तक रोज़े को पूरा किया करो, और अपनी बीवियों से मिलाप मत करो जिन दिनों में कि तुम लोग मस्जिदों में ऐतकाफ़ में बैठे हो, ये** (सब बताए हुक्म) **अल्लाह तआ़ला की बान्धी हुई हदें हैं इसलिए इन** (हदों) **से** (निकलना तो कैसा) **निकलने के पास भी मत होना,** (और जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने ये हुक्म बयान किये हैं) **इसी तरह अल्लाह तआ़ला अपने** (और) **हुक्म** (भी) **लोगों** (के सुधार) **के वास्ते बयान करते हैं ताकि वो लोग** (इन हुक्मों को जानकर इन हुक्मों के ख़िलाफ़ करने से) **बचें(187) और आपस में एक दूसरे के माल नाजाइज़ तरीक़े से मत खाओ और उन** (के झूटे मुक़दमे) **को हाकिमों के यहां इस लिए मत पहुंचाओ कि** (उसके वास्ते से) **लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के तरीक़े** (यानी ज़ुल्म) **से खा जाओ जब कि तुम को** (अपने झूट और ज़ुल्म का) **पता भी हो(188)।**

नोटः- इस आयत में सभी हराम तरीक़ों से माल कमाने और बरतने को मना किया गया है।

یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِیَ مَوَاقِیْتُ لِلنَّاسِ وَ الْحَجِّ ؕ وَ لَیْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُیُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَ لٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰی ۚ وَ اْتُوا الْبُیُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۸۹﴾

आयत न० 189

(कुछ लोग) **आप से चांद की** (हर महीने घटने बढ़ने की) **हालत** (और उस के फ़ाइदे) **के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि** (फ़ाइदा इस का यह है कि) **वो** (चांद अपने इस घटने और बढ़ने से) **वक़्त की पहचान का एक आला है लोगों के** (हिसाब जैसे लेन देन व इद्दत के) **लिए और** (इबादतो जैसे) **हज** (व ज़कात व रोज़ा) **के लिए, और इसमें कोई कमाल नहीं कि घरों में उन के पीछे की तरफ़ से आया करो हां लेकिन कमाल यह है कि कोई आदमी हराम** (बातों) **से बचे, और** (चूंकि घरों में दरवाज़ों से आना हराम नहीं है इसलिए इससे बचना भी ज़रूरी नहीं सो अगर आना चाहो तो) **घरों में उनके दरवाज़ों से आओ, और** (असल बात तो यह है कि) **अल्लाह तआ़ला से डरते रहो ताकि तुम** (दोनों जहान में) **कामयाब हों**(189)।

नोटः- कुछ लोग इस्लाम लाने से पहले हज या उमरे का अहराम बान्ध लेने के बाद अगर किसी ज़रूरत से घर जाना चाहते तो दरवाज़े से जाना मना समझते इसलिए पीछे की तरफ़ से या दीवार तोड़ कर उससे अन्दर जाते और इस काम को बहुत अच्छा समझते थे।

وَ قَاتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ﴿۱۹۰﴾ وَ اقْتُلُوْهُمْ حَیْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَ اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَیْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَ الْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَ لَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
حَتّٰی یُقٰتِلُوْكُمْ فِیْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۱۹۱﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۹۲﴾ وَ
قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰی لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ یَكُوْنَ الدِّیْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَی الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۹۳﴾ اَلشَّهْرُ
الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَ الْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰی عَلَیْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَیْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰی عَلَیْكُمْ ۪
وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۹۴﴾ وَ اَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ لَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَی التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَ
اَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۹۵﴾

आयत न० 190 से 195

नोटः- सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मक्के के काफ़िरों और मुसलमानों के बीच यह समझौता हुआ था कि अगले साल उमरा करने आ सकते हैं। मुसलमानों को यह खटका हुआ कि कहीं वो अपना वादा तोड़ कर हमला न करदें और हज के महीनों में जंग जाइज़ नहीं तो क्या किया जाए उस पर ये आयतें उतरीं किः-

(अगर वो लोग ख़ुद समझौता तोड़ें) **और** (तुम से लड़ने को तैयार हो जाएं तो बे झिजक) **तुम** (भी) **लड़ो अल्लाह की राह में उन लोगों के साथ जो** (समझौता तोड़ कर) **तुम्हारे साथ लड़ने लगें और** (अपने आप समझौते की) **हद से मत निकलो** (कि वादा तोड़ कर के लड़ने लगो), **बेशक अल्लाह तआ़ला** (शरीअत की) **हद से निकलने वालों को पसन्द नहीं करते(190) और** (जबकि वो ख़ुद वादा तोड़ते हैं तो) **उन को क़त्ल करो जहां उन को पाओ और** (चाहे) **उन को** (मक्के से) **निकाल बाहर करो जहां से उन्होंने तुम को** (तंग करके और सता कर) **निकलने** (और हिजरत करने) **पर मजबूर किया है** (और इस का इल्ज़ाम भी उन्हीं पर रहेगा कि वादा तोड़ कर उन्होंने बड़ा फ़साद किया है और ऐसा) **फ़साद क़त्ल से भी ज़्यादा सख़्त है, और** (मक्के के आस पास की जगह हरम है वहां जंग जाइज़ नहीं इस लिए हुक्म दिया जाता है कि) **उनके साथ ख़ाना काबा के आस पास में** (कि हरम कहलाता है) **जंग मत करो जब तक कि वो लोग वहां तुम से ख़ुद न लड़ें, हां अगर वो** (काफ़िर) **ख़ुद ही लड़ने का सामान करने लगें तो** (उस वक़्त फिर तुम को भी इजाज़त है कि) **तुम** (भी) **उन को मारो, ऐसे काफ़िरों की** (जो हरम में लड़ने लगें) **ऐसी ही सज़ा है(191) फिर अगर** (जंग शुरू होने के बाद भी) **वो लोग** (यानी मक्के के मुशरिक अपने कुफ़्र से) **तौबा करलें** (और मुसलमान हो जाएं) **तो अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ करने वाले** (और) **महरबान हैं** (यानी उनके पहले कुफ़्र को मुआ़फ़ कर देंगे)**(192) और** (अगर वो लोग न मानें तो) **उन के साथ इस हद तक लड़ो कि** (उनमें) **अ़क़ीदे की ख़राबी** (यानी शिर्क़) **न रहे और** (उन का) **दीन** (ख़ालिस) **अल्लाह ही का हो जाए** (यानी शिर्क छोड़ कर इस्लाम क़ुबूल करलें), **और अगर वो लोग** (कुफ़्र से) **बाज़ आजाएं** (और तौबा करलें) **तो** (आख़रत की मुआ़फ़ी और रहमत के साथ दुनिया में भी सज़ा की) **सख़्ती किसी पर नहीं हुआ करती सिवाए ज़ालिमों के(193)** (और हुरमत के महीनों में जंग की फ़िक्र मत करो क्योंकि) **हुरमत वाला महीना बदला है** (उस) **हुरमत वाले महीने का** (जब कि वो भी तुम से न लड़ें) **और** (वजह यह है कि) **ये हुरमतें तो अदले बदले की चीज़ें हैं, सो** (जो तुम्हारा लिहाज़ करे तुम भी उस का लिहाज़ा करो और) **जो तुम पर ज़्यादती करे तुम भी**

उस पर ज़्यादती करो जैसी उस ने तुम पर ज़्यादती की है, और (इन सब हुक्मों में) **अल्लाह तआ़ला से डरते रहो** (कि किसी हुक्म में क़ानून की हद से बढ़ने न पाओ) **और यक़ीन कर लो कि अल्लाह तआ़ला** (अपनी महरबानी व रहमत से) **उन्हीं के साथी हैं जो उन से डरने वाले हैं(194) और तुम लोग** (जान के साथ माल भी) **ख़र्च किया करो अल्लाह की राह** (यानी जिहाद) **में और अपने आप को अपने हाथों तबाही में मत डालो** (कि ऐसे मौक़ों में जान व माल ख़र्च करने में कंजूसी करने लगो जिसका नतीजा यह होगा कि तुम कमज़ोर और दुशमन ताक़तवर हो जाएगा जिसके तबाही होने में कोई शक नहीं) **और** (जो) **काम** (करो) **अच्छी तरह किया करो** (जैसे इस मौक़े पर ख़र्च करना है दिल खोल कर ख़ुशी से अच्छी नीयत के साथ ख़र्च करो) **बेशक अल्लाह तआ़ला पसन्द करते हैं अच्छी तरह काम करने वालों को**(195)

नोटः- चार महीने ज़ीक़ादा, ज़िल हिज्जा, मुहर्रम और रजब ये हुरमत वाले महीने कहलाते थे इनमें जंग करना मना था।

وَ اَتِمُّوا الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَ لَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ
الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ
فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ٚ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ
فِى الْحَجِّ وَ سَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ
اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۹۶﴾ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَ لَا
فُسُوْقَ ۙ وَ لَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ؕ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَ تَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ٞ وَ
اتَّقُوْنِ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۷﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَ اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَ اِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ
اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَ اسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾

आयत न० 196 से 199

और (जब हज या उमरा करना हो तो उस) **हज और उमरा को अल्लाह तआ़ला के** (ख़ुश करने के) **वास्ते पूरा-पूरा अदा किया करो** (कि आ़माल व तरीक़े भी सब ठीक हों और नीयत भी

ख़ालिस सवाब ही की हो), **फिर अगर** (किसी दुशमन की तरफ़ से या किसी बीमारी की वजह से हज व उमरा करने से) **रोक दिये जाओ तो** (उस हालत में यह हुक्म है कि) **क़ुरबानी का जानवर जो आसानी से मिले** (ज़बह करे और हज व उमरा का अहराम खोल दे और शरीअ़त में जिस का तरीक़ा सर मुंडाना या बाल कटा देना है) **और** (यह नहीं कि फ़ौरन अहराम खोल दे बल्कि) **अपने सरों को** (अहराम खोलने की नीयत से) **उस वक़्त तक मत मुंडाओ जब तक कि** (वो) **क़ुरबानी का जानवर** (जिसके ज़बह का इस हालत में हुक्म था) **अपने ठिकाने पर न पहुंच जाए, लेकिन तुम में से** (कोई) **बीमार हो या उस के सर में** (ज़ख़्म या किसी क़िस्म की) **तकलीफ़ हो** (और इस वजह से पहले ही सर मुंडाने की ज़रूरत पड़े) **तो** (उस को इजाज़त है कि वो सर मुंडा कर) **फ़िदया** (यानी उस का शरई बदला) **देदे** (यानी चाहे) **तीन रोज़े से या** (छः ग़रीबों को हर एक ग़रीब को सदक़ाए फ़ित्र के बराबर) **ख़ैरात दे देने से या** (एक बकरी) **ज़बह कर देने से, फिर जब तुम अमन की हालत में हो** (चाहे तो पहले ही से कोई परीशानी न हो या बाद में जाती रहे) **तो** (इस सूरत में हज व उमरा के बारे में क़ुरबानी करना सब के ज़िम्मे नहीं बल्कि ख़ास) **जो आदमी उमरा व हज साथ करे** (यानी हज के दिनों में उमरा भी करे) **तो** (सिर्फ़ उस पर वाजिब है कि) **जो कुछ क़ुरबानी मिले** (ज़बह करे), **फिर** (हज के दिनों में उमरा भी करने वालों में से) **जिस आदमी को क़ुरबानी का जानवर न मिले** (जैसे ग़रीब है) **तो** (उस के ज़िम्मे बजाए क़ुरबानी के) **तीन दिन के रोज़े हैं हज के दिनों में और सात** (दिन के रोज़े) **हैं जब कि तुम्हारे हज से लौटने का वक़्त आजाए** (यानी हज कर चुको), **ये पूरे दस** (दिन के रोज़े) **हुए,** (और) **यह** (हज व उमरा को मिलाना हर एक को जाइज़ नहीं बल्कि ख़ास) **उस आदमी के लिए** (ठीक) **है जिस के घर वाले ख़ाना काबा के पास में न रहते हों** (यानी हरम की हदों में उन का वतन न हो क्योंकि वो तो बाद में भी उमरा कर सकते हैं जब कि दूर वालों के लिए यह मुश्किल काम है), **और** (इन सब हुक्मों को करते हुए) **अल्लाह तआ़ला से डरते रहो** (कि कोई बात हुक्म के ख़िलाफ़ न हो) **और** (अच्छी तरह) **जान लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला** (निडर लोगों और मुख़ालफ़त करने वालों को) **सख़्त सज़ा देते हैं(196) हज के** (करने का ज़माना) **कुछ महीने हैं जो** (मशहूर व) **मालूम हैं** (एक शव्वाल, दूसरा ज़ीक़ादा तीसरे दस तारीख़ें ज़िल हिज्जा की) **तो जो आदमी इन** (दिनों) **में हज का इरादा करले** (कि हज का अहराम बान्ध ले) **तो फिर** (उस आदमी को) **न कोई गन्दी बात** (जाइज़) **है और न कोई गुनाह का काम और न किसी क़िस्म का झगड़ा करना सही है** (बल्कि उस को चाहिए कि हर वक़्त नेक ही कामों में लगा रहे), **और तुम जो नेक काम करोगे अल्लाह तआ़ला**

को उस की ख़बर होती है (सो उस का फल तुम को मिलेगा), **और** (जब हज को जाने लगो तो) **ख़र्च ज़रूर** (साथ) **ले लिया करो सब से बड़ी बात** (और भलाई) **ख़र्च में** (मांगने से) **बचा रहना है, और ऐ समझदार लोगो** (इन हुक्मों को पूरा करने में) **मुझ से** (यानी मेरी नाफ़रमानी से) **डरते रहो**(197) (और अगर हज के सफ़र में कुछ कारोबार करने की ज़रूरत हो तो) **तुम को इसमें ज़रा भी गुनाह नहीं कि** (हज में) **रोज़गार की तलाश करो जो** (तुम्हारे नसीब में) **तुम्हारे रब की तरफ़ से** (लिखा) **है, फिर जब तुम लोग अराफ़ात** (में ठहर कर वहां) **से वापस आने लगो तो मशअ़रे हराम के पास** (यानी मुज़दलिफ़ा में आकर रात को वहां ठहर के) **अल्लाह तआ़ला को याद किया करो, और** (याद करने का तरीक़ा अपनी राय से नहीं बल्कि) **उस तरह याद करो जिस तरह तुम को** (अल्लाह तआ़ला ने) **बता रक्खा है, और बेशक इस** (बताने) **से पहले तुम अन्जान थे**(198) **फिर तुम सब को ज़रूरी है** (चाहे क़ुरैश हों या दूसरे लोग) **कि उसी जगह होकर वापस आओ जहां और लोग जाकर वहां से वापस आते हैं और** (हज के हुक्मों में पुरानी रस्मों पर चलने से) **अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा करो, बेशक अल्लाह तआ़ला मुआफ़ कर देंगे और महरबानी करेंगे**(199)।

नोटः- क़ुरैश ने अपनी बड़ाई जिताने के लिए यह दस्तूर निकाल रक्खा था कि सभी हाजी तो अराफ़ात में होकर फिर वहां से मुज़दलिफ़ा को आते थे और ये मुज़दलिफ़ा में ही रह जाते थे अराफ़ात में न जाते थे तो यह जाइज़ नहीं यहां यह बात भी मालूम हुई कि बड़ों को चाहिए कि छोटों से अलग होकर न रहें मिल जुल कर रहें इससे आपस में हमदर्दी और मुहब्बत पैदा होती है। इस्लाम वैसे भी बराबरी सिखाता है।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي
الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝٢٠٠ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ
حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝٢٠١ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٢٠٢ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ
اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٢٠٣

आयत न० 200 से 203

नोटः- इस्लाम लाने से पहले कुछ लोगों की यह आदत थी कि हज के बाद मिना में जमा होकर अपने बाप दादों का ज़िक्र करते और उन की बड़ाई बयान करते थे अल्लाह तआ़ला इस बेहूदा काम की जगह अपना ज़िक्र करने को कहते हैं।

फिर जब तुम अपने हज के काम पूरे कर चुका करो तो अल्लाह तआ़ला का (शुक्र व बड़ाई के साथ) **ज़िक्र किया करो जिस तरह अपने बाप दादा का ज़िक्र करते हो बल्कि** (चाहिए) **यह ज़िक्र उससे** (भी) **बढ़कर हो,** (और लोगों में से) **कुछ लोग** (जो कि काफ़िर हैं) **ऐसे हैं जो** (दुआ़ में यह) **कहते हैं कि हमारे रब हम को** (जो कुछ देना हो) **दुनिया में दे दीजिए** (बस उन को जो कुछ मिलना होगा दुनिया ही में मिल रहेगा) **और ऐसे लोगों को आख़रत में** (आख़रत के इनकार की वजह से) **कोई हिस्सा नहीं मिलेगा(200) और कुछ आदमी** (जो कि मोमिन हैं) **ऐसे हैं जो** (दुआ़ में यह) **कहते हैं कि या रब हमारे हम को दुनिया में भी भलाई दीजिए और आख़रत में भी भलाई दीजिए और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचाइये(201)** (सो ये लोग ऊपर के लोगों की तरह बेनसीब नहीं बल्कि) **ऐसे लोगों को** (दोनो जहान में) **बड़ा हिस्सा मिलेगा उनके इस काम** (यानी दो जहान की भलाई मांगने) **की वजह से, और अल्लाह तआ़ला जल्दी ही हिसाब लेने वाले हैं** (क्योंकि क़ियामत में हिसाब होगा और क़ियामत पास आती जाती है)**(202) और** (मिना में ख़ास तरीक़े से भी) **अल्लाह का ज़िक्र किया करो कई दिन तक** (वो ख़ास तरीक़ा कंकरियों का तीन पत्थरों पर मारना है और वो कई दिन 10, 11, 12 व 13 तारीख़ें ज़िल हिज्जा की हैं)**, फिर जो आदमी** (कंकरियां मार कर दसवीं तारीख़ के बाद) **दो दिन में** (मक्का वापस आने में) **जल्दी करे उस पर भी कुछ गुनाह नहीं, और जो आदमी** (इन) **दो दिन में** (मक्का वापसी में) **देर करे** (यानी 12 वी को न आए बल्कि 13 वीं को आए) **उस पर भी कुछ गुनाह नहीं** (और ये सब बातें) **उस आदमी के वास्ते** (हैं) **जो** (अल्लाह से) **डरे** (और न डरने वालों को गुनाह सवाब ही से क्या वास्ता)**, और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और यक़ीन रक्खो कि बेशक तुम सब को अल्लाह ही के पास जमा होना है(203)।**

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ يُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِىْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَاِذَا
تَوَلّٰى سَعٰى فِى الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ

اَخَذَتۡهُ الۡعِزَّةُ بِالۡاِثۡمِ فَحَسۡبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئۡسَ الۡمِهَادُ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّشۡرِىۡ نَفۡسَهُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ
اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ۝

आयत न० 204 से 207

नोटः- कोई आदमी अनस बिन शरीक था जो मीठा बोलने वाला और बहुत बात बनाने वाला था वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर क़समें खा खा कर मुसलमान होने का दावा करता और पास से उठ कर जाता तो फ़साद, शरारत और लोगों को सताने में लग जाता उस मुनाफ़िक़ के बारे में कहते हैं किः-

और एक आदमी ऐसा भी है कि उस की बात चीत जो सिर्फ़ दुनिया के मतलब से होती है (कि मुसलमान होने का दिखावा करना, उस की मीठी बोली की वजह से) **आप को अच्छी लगती है और वो** (अपना ऐतबार बढ़ाने को) **अल्लाह तआ़ला को गवाह बनाता है अपने दिल की सच्चाई पर** (यानी क़समें खाता है) **जब कि** (बिल्कुल झूटा है क्योंकि असलीयत मे) **वो** (आप की) **दुशमनी में** (बहुत) **सख़्त है(204) और** (जिस तरह आप का दुशमन है इसी तरह मुसलमानों को भी सताता है बस) **जब** (आप के पास से) **उठ कर जाता है तो इस कोशिश में फिरता रहता है कि शहर में** (कोई) **फ़साद करदे और** (किसी की) **खेती और जानवर बर्बाद करदे, और अल्लाह तआ़ला फ़साद** (की बातों) **को पसन्द नहीं करते(205) और** (इस दुशमनी और सताने के साथ घमन्ड इतना है कि) **जब उससे कोई कहता है कि अल्लाह से डर तो उस का घमन्ड उस को गुनाह पर** (और ज़्यादा) **उकसा देता है सो ऐसे आदमी की सज़ा के लिए दोज़ख़ काफ़ी है, और वो बुरा ठिकाना है(206) और कुछ आदमी ऐसे भी हैं कि अल्लाह तआ़ला को ख़ुश करने के बदले में अपनी जान तक का सौदा कर लेते हैं, और अल्लाह तआ़ला ऐसे बन्दों के हाल पर बहुत महरबान हैं(207)।**

नोटः- किताबों में सहाबा किराम के ऐसे बहुत से क़िस्से लिखे हैं कि उन्होंने दीन के लिए अपनी जान की भी बाज़ी लगा दी।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا ادۡخُلُوۡا فِى السِّلۡمِ كَآفَّةً ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوۡا خُطُوٰتِ الشَّيۡطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ۝ فَاِنۡ
زَلَلۡتُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡكُمُ الۡبَيِّنٰتُ فَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۝ هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ يَّاۡتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىۡ

ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۲۱۰﴾ ع

आयत न० 208 से 210

ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ (यानी हर काम दीन के तरीक़े पर हो) **और शैतान के तरीक़े पर मत चलो, बेशक वो तुम्हारा खुला दुशमन है** (कि ऐसी पट्‌टी पढ़ा देता है कि देखने में तो वो दीन लगे और असलीयत में बिल्कुल दीन के ख़िलाफ़)(208) **फिर अगर इसके बाद कि तुम को खुली दलीलें** (इस्लाम व शरीअ़त के हुक्मों की) **पहुंच चुकी हैं** (फिर भी सीधे रास्ते से) **बिचलने लगे तो यक़ीन रक्खो कि अल्लाह तआ़ला** (बड़े) **ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं** (सख़्त सज़ा देंगे चाहे किसी वजह से अभी न दें क्योंकि वो) **हिकमत वाले** (भी) **हैं**(209) **क्या ये लोग** (जो सच्चाई जानने के बाद भी ग़लत राह चलते हैं) **सिर्फ़ इस बात की इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह तआ़ला और फ़रिशते बादल के शामयानों में उनके पास** (सज़ा देने के लिए) **आएं और सारा क़िस्सा ही ख़त्म हो जाए** (यानी क्या उस वक़्त दीन की बाते मानेंगे जबकि मानना ही क़ुबूल न होगा), **और ये सारे** (बदले व सज़ा के) **मुक़द्दमे अल्लाह तआ़ला ही की** (अदालत की) **तरफ़ लाए जाएंगे** (किसी दूसरे को कोई हक़ न होगा सो ऐसे ज़बरदस्त की मुख़ालफ़त करने का अन्जाम सिवाए ख़राबी के क्या हो सकता है)(210)।

नोटः- अल्लाह तआ़ला और फ़रिशतों का बादल के शामयानों में पास आना क़ियामत में होगा और यह कैसे होगा इस की खोजबीन मे न पड़े बल्कि इस का यक़ीन रक्खे।

سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍ ۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۱۱﴾ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۱۲﴾ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ
مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۠ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا
اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا
اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۳﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا

الْجَنَّةَ وَ لَمَّا يَأْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ۭ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَاۗءُ وَالضَّرَّاۗءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۭ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

आयत न० 211 से 214

आप बनी इस्राईल (के आ़लिमों) **से** (ज़रा) **पूछिए** (तो सही) **हम ने उन को** (यानी उनके बड़ों को) **कितनी खुली निशानियां दी थीं** (मगर उन लोगों ने उससे राह पाने की बजाए गुमराही पर कमर बान्धी फिर देखो कैसी-कैसी सज़ाएं भी भुगतीं), **और** (हमारा क़ानून यह है कि) **जो आदमी अल्लाह तआ़ला की** (ऐसी बड़ी) **नेमत** (खुली निशानियों) **को बदलता है उसके पास पहुंचने के बाद** (यानी बजाए उससे राह पाने के और गुमराह बनता है) **तो बेशक अलाह तआ़ला** (ऐसे आदमी को) **सख़्त सज़ा देते हैं**(211) (और) **दुनिया की दौलत काफ़िरों को लुभावनी लगती है और** (इसी वजह से वो) **इन** (ग़रीब) **मुसलमानों की हंसी उड़ाते हैं, जब कि ये** (मुसलमान) **जो कुफ़्र व शिर्क से बचते हैं इन काफ़िरों से ऊंचे दर्जे** (की हालत) **में होंगे क़ियामत के दिन** (क्योंकि काफ़िर दोज़ख़ में होंगे और मुसलमान जन्नत में), **और** (आदमी को सिर्फ़ माल पर घमन्ड न होना चाहिए क्योंकि) **रोज़ी तो अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे बे हिसाब** (यानी बहुत ज़्यादा) **दे देते हैं** (बस इस का दारोमदार नसीब पर है न कि कमाल और प्यारा होने पर सो यह ज़रूरी नहीं कि जो माल ज़्यादा रखता हो वो अल्लाह के यहां भी इ़ज़्ज़त वाला हो)(212) **सब आदमी** (एक ज़माने में) **एक ही दीन पर थे** (क्योंकि सब से पहले आदम अ़लैहिस्सलाम अपनी बीवी के साथ आए और जो औलाद होती गई उस को सच्चा दीन सिखाते रहे एक ज़माने के बाद अ़क़ीदे बदलने लगे), **फिर** (इसके सुधार को) **अल्लाह तआ़ला ने** (बहुत से) **नबियों को भेजा जो कि** (सच्चे दीन के मानने वालों को) **ख़ुशख़बरी सुनाते थे और** (न मानने वालों को अ़ज़ाब से) **डराते थे, और इन** (पैग़म्बरों) **के साथ** (आसमानी) **किताबें भी ठीक- ठीक उतारीं** (और इन पैग़म्बरों का भेजना और किताबों का उतारना) **इसलिए** (था) **कि अल्लाह तआ़ला लोगों में** (उन मज़हबी बातों का) **फ़ैसला करदें जिन बातों में वो झगड़ा करते थे, और इस किताब की मुख़ालफ़त किसी और ने नहीं मगर उन लोगों ने की जिन को** (शुरू में) **वो किताब मिली थी** (यानी पढ़े लिखे और समझदार लोग क्योंकि आम लोग तो उनके पीछे हो लिया करते हैं, और मुख़ालफ़त भी कैसे वक़्त की) **बाद इसके कि उनके पास खुली दलीलें पहुंच चुकी थीं** (और मुख़ालफ़त भी की) **आपसी ज़िद की वजह से, फिर अल्लाह तआ़ला ने** (सदा) **ईमान वालों को वो सच्चा दीन जिसमें** (लोग) **मुख़ालफ़त किया करते थे अपनी**

महरबानी से (पैग़म्बरों और किताबों पर ईमान लाने की वजह से) **बता दिया, और अल्लाह तआला जिस को चाहते हैं उस को सीधा रास्ता बता देते हैं**(213) (मुसलमानों) **क्या तुम यह समझते हो कि जन्नत में** (बेमेहनत) **दाख़िल हो जाओगे हालांकि** (अभी कुछ तकलीफ़ तो उठाई ही नहीं क्योंकि) **तुम को उन** (मुसलमान) **लोगों की सी हालतें पेश नहीं आईं जो तुम से पहले हुए हैं, उन पर** (दुशमनों की वजह से) **ऐसी ऐसी तंगी और सख़्ती पड़ी और** (मुसीबतों से) **उन को यहां तक हिलाया गया कि** (उस ज़माने के) **पैग़म्बर तक और जो उनके साथी ईमान वाले थे** (बेचैन होकर) **बोल उठे कि अल्लाह तआला की** (वादा की हुई) **मदद कब होगी,** (जिस पर उन को जवाब से तसल्ली की गई) **याद रक्खो बेशक अल्लाह तआला की मदद** (बहुत) **नज़दीक** (ही होने वाली) **है**(214)

नोटः- पैग़म्बरों ओर उन के साथियों का यह कहना कि अल्लाह की मदद कब होगी किसी शक शुबह की वजह से नहीं था ख़ुदा की मदद पर तो यक़ीन और भरोसा पूरा था बल्कि अपनी परीशानी को अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाना था कि मदद जल्दी आ जाए और यह अदा तो अल्लाह तआला को पसन्द है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾

आयत न० 215

लोग आपसे पूछते हैं कि (सवाब के वास्ते) **क्या चीज़ ख़र्च किया** (करें और किस मौक़े पर ख़र्च किया) **करें, आप कह दीजिए कि जो माल तुम को ख़र्च करना हो तो** (उस का तय करना तो तुम्हारी हिम्मत पर है हां मगर मौक़ा हम बताए देते हैं कि) **मां बाप का हक़ है और रिशतेदारों और बे बाप के बच्चों का और बहुत ग़रीबों का और मुसाफ़िर का, और जो भी नेक काम करोगे** (चाहे अल्लाह की राह में ख़र्च करना हो या और कुछ हो) **तो अल्लाह तआला उस को अच्छी तरह जानते हैं** (वो उस पर सवाब देंगे)(215)

नोटः- यहां ज़कात या सदक़ाए वाजिबा का बयान नहीं बल्कि इससे मुराद नफ़ली ख़ैर ख़ैरात है।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَّهُوَ
شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

आयत न० 216

जिहाद करना तुम पर फ़र्ज़ किया गया है और वो तुम को (मन से) **भारी** (लगता) **है, और यह हो सकता है कि तुम किसी बात को भारी समझो और** (असलियत में) **वो तुम्हारे लिए भलाई हो, और यह** (भी) **हो सकता है कि तुम किसी बात को पसन्द करो और** (असलियत में) **वो तुम्हारे लिए बुराई** (का सामान) **हो, और** (हर चीज़ की असलियत को) **अल्लाह तआ़ला जानते हैं और तुम** (पूरा-पूरा) **नहीं जानते** (अच्छे बुरे का फ़ैसला अपनी मर्ज़ी से न करो जो कुछ अल्लाह का हुक्म हो जाए उसी के पाबन्द रहो)**(216)**।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ۗ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۗ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۗ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهٖ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۗ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى
يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوْا ۗ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾ إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ
هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ أُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ
الْمَيْسِرِ ۗ قُلْ فِيْهِمَآ إِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَإِثْمُهُمَآ أَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬
قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۗ
قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۗ وَإِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۗ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَأَعْنَتَكُمْ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

आयत न० 217 से 220

नोटः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ सहाबियों का एक सफ़र में काफ़िरों के साथ मुक़ाबिला हो गया जिसमें एक काफ़िर मारा गया वो रजब की पहली तारीख़ थी जिस में जंग करना मना था मुसलमान इस को जमादि उ़ल आख़िर की तीस तारीख़ समझते थे इस पर काफ़िरों ने ऐतराज़ किया उसके जवाब में कहा जाता है कि-

लोग आप से हुरमत वाले महीने में लड़ाई करने के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि इसमें जान बूझ कर लड़ना हराम है (और ऐसा जान बूझ कर हुआ नहीं), और अल्लाह तआ़ला की राह (यानी दीन) से (लोगों को) रोकना (यानी मुसलमान होने पर सताना कि डर के मारे लोग मुसलमान न हों) और अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करना और ख़ाना काबा के साथ कुफ़्र करना (कि वहां बहुत से बुत रख छोड़े थे और बजाए अल्लाह की इबादत के उन की इबादत और तवाफ़ करते थे) और ख़ाना काबा के पास बसने वालों (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरे मोमिनों) को (तंग और परीशान करके) इस (जगह) से निकाल देना (जिससे नोबत घर छोड़ने की पहुंची तो ये हरकतें हुरमत के महीने में लड़ने से भी ज़्यादा) बड़ा जुर्म है अल्लाह तआ़ला के यहां (क्योंकि ये हरकतें दीन में फ़ितना फैलाने वाली हैं), और (ऐसा) फ़ितना फैलाना (इस ख़ास) क़त्ल से (जो मुसलमानों से हुआ बुराई में) बहुत बढ़ कर है, और ये काफ़िर तुम्हारे साथ सदा लड़ाई (झगड़ा ही) रक्खेंगे इसलिए कि अगर (अल्लाह न करे) इन का बस चले तो तुम को तुम्हारे दीन (इस्लाम) से फेर दें, और जो आदमी तुम में से अपने दीन (इस्लाम) से फिर जाए फिर काफ़िर ही होने की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के (नेक) काम दुनिया और आख़िरत में सब बर्बाद हो जाते हैं (और) ये लोग दोज़ख़ (में जाने) वाले हैं, (और) वो उसमें सदा रहेंगे(217) सचमुच जो लोग ईमान लाए हों और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में घर छोड़ दिया हो और जिहाद किया हो ऐसे लोग तो अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हुआ करते हैं, और अल्लाह तआ़ला (इस ग़लती को मुआ़फ़ कर देंगे और ईमान व जिहाद व हिजरत की वजह से तुम पर रहमत करेंगे क्योंकि वो) बड़े मुआ़फ़ करने वाले रहमत वाले हैं(218) (और) लोग आप से शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि इन दोनों (चीज़ों) में गुनाह की बड़ी-बड़ी बातें भी (पैदा हो जाती) हैं और लोगों के (कुछ) फ़ाइदे भी हैं, और वो गुनाह की बातें इन फ़ाइदों से ज़्यादा बढ़ी हुई हैं (इसलिए दोनों को छोड़ देना चाहिए), और (लोग) आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें, आप कह दीजिए कि जो (माल) अपनी ज़रूरत से ज़्यादा बचे, अल्लाह तआ़ला यह हुक्म इसलिए बयान करते हैं कि तुम (ख़र्च करने में) सोच समझ से काम लो(219) दुनिया व आख़िरत की बातों में, और आप से यतीमों के (माल के) बारें में पूछते हैं, आप कह दीजिए उन की भलाई जिसमें हो, और अगर उन का ख़र्च (अपने साथ) मिलालो तो वो तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह तआ़ला (नीयतों को) जानते हैं कौन ना इन्साफ़ी करने वाला है और कौन भलाई करने वाला, और

अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो तुम पर मेहनत (का बोझ) **डाल देते, बेशक अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (ताक़त वाले और) **हिकमत वाले हैं**(220)।

नोटः- अगर किसी चीज़ या किसी काम में नफ़े के साथ नुक़सान भी हो तो नुक़सान से बचने के लिए उस को छोड़ देना ज़रूरी है जैसा कि ऊपर शराब और जुवे के बारे में बयान हुआ।

وَ لَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَ لَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَ لَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَ لَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَ اللّٰهُ
يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَ الْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَ يُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۲۱﴾ وَ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ
قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَ لَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ
اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿۲۲۲﴾ نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۪ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى
شِئْتُمْ ۫ وَ قَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۲۳﴾

आयत न० 221 से 223

और (ऐ मुसलमानों तुम) **निकाह मत करो मुशरिक औरतों से जब तक** (कि वो) **ईमान न ले आएं, और मुसलमान बान्दी अच्छी है मुशरिक बीवी से चाहे वो** (मुशरिक औ़रत) **तुम को अच्छी लगती हो, और निकाह न करो** (ऐ मुसलमान औ़रतों) **मुशरिक मर्दों से जब तक कि वो ईमान न ले आएं, और ग़ुलाम मुसलमान अच्छा है मुशरिक** (मर्द) **से चाहे वो** (मुशरिक) **तुम को अच्छा लगता हो, वो** (लोग) **बुलाते हैं दोज़ख़ की तरफ़ और अल्लाह तआ़ला बुलाते हैं जन्नत की तरफ़ और बख़्शिश की तरफ़ अपने हुक्म से, और बताते हैं अपने हुक्म लोगों को ताकि वो नसीहत मानें**(221) **और लोग आप से महावारी की हालत** (में बीवी से मिलाप करने के हुक्म) **के बारे में पूछते हैं, आप कह दीजिए कि वो** (महावारी) **गन्दगी की चीज़ हैं तो महावारी की हालत में औ़रतों** (के साथ मिलाप करने) **से अलग रहा करो** (इस हालत में) **उन से मिलाप मत करो जब तक वो** (महावारी से) **पाक न हो जाएं, फिर जब** (वो औ़रतें) **अच्छी तरह पाक हो जाएं** (कि नापाकी का शक भी न रहे) **तो उन के पास** (उसी तरीक़े से) **आओ जाओ** (यानी उन से मिलाप करो) **जिस तरह से अल्लाह तआ़ला ने तुम को इजाज़त दी है** (यानी आगे से), **बेशक अल्लाह तआ़ला मुहब्बत रखते हैं तौबा करने वालों से** (जैसे भूल से ग़लती हो गई फिर तौबा कर

ली) **और मुहब्बत रखते हैं पाक साफ़ रहने वालों से** (जो महावारी की हालत में मिलाप करने से और दूसरी मना की हुई बातों से बचते हैं)(222) **तुम्हारी बीवियां तुम्हारे लिए खेत** (की जगह) **हैं** (जिसमें मनी बीज की जगह और बच्चा पैदावार की जगह है)**, सो अपने खेत में जिस तरफ़ से चाहो आओ** (यानी चाहे करवट से हो या पीछे से या आगे बैठ कर या नीचे लेट कर हो जैसे सहूलत हो मगर आना हो हर हाल में खेत के अन्दर कि वो आगे का मौक़ा है, और इस काम में ऐसे मत लग जाओ कि आख़रत ही को भूल जाओ बल्कि) **आगे के वास्ते** (यानी आख़रत के लिए) **भी अपने लिए कुछ नेक काम करते रहो, और अल्लाह तआ़ला से हर हाल में डरते रहो और यह यक़ीन रक्खो कि बेशक तुम अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होने वाले हो, और** (ऐ पैग़म्बर) **ऐसे ईमानदारों को** (जो नेक काम करें, अल्लाह से डरें अल्लाह के सामने जाने का यक़ीन रक्खें) **ख़ुशी की ख़बर सुना दीजिए** (कि उन को आख़रत में हर तरह की नेमतें मिलेंगी)(223)।

وَ لَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَ تَتَّقُوْا وَ تُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٢٤ لَا
يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَ لٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝٢٢٥
لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٢٦ وَ اِنْ عَزَمُوا
الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٢٧

आयत न० 224 से 227

और अल्लाह तआ़ला के नाम को अपनी क़समों के वास्ते से इन कामों का पर्दा मत बनाओ कि तुम नेकी के और तक़्वे के और लोगों में सुधार के काम न करो (यानी अल्लाह के नाम की यह क़सम न खाओ कि हम ये नेक काम न करेंगे)**, और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनते जानते हैं** (ज़बान संभाल कर बात करो और दिल में बुरी बातें मत लाओ)(224) **अल्लाह तआ़ला** (आख़रत में) **तुम्हारी पकड़ न करेंगे** (तुम्हारी क़समों में से ऐसी) **बेहूदा क़सम पर** (जिसमें बिना इरादा झूट बोला गया) **लेकिन पकड़ करेंगे** (उस झूटी क़सम पर) **जिसमें तुम्हारे दिलों ने झूट बोलने का इरादा किया है, और अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ करने वाले हैं** (कि ऐसी बेहूदा क़सम पर पकड़ न की) **सहार वाले हैं** (कि जान बूझ कर झूटी क़सम खाने की सज़ा में आख़रत तक मोहलत दी)(225) **जो लोग** (चार महीने या कम या ज़्यादा दिनों के लिए) **अपनी बीवियों के पास न जाने की क़सम खा लेते हैं उन के लिए चार महीने तक की मोहलत है, फिर** (इन चार महीने

के अन्दर ये लोग अपनी क़सम तोड़ कर) **आपस में मेल कर लें** (तब तो निकाह बाक़ी रहेगा) **अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ करने वाले महरबान हैं(226) और अगर तलाक़ देने का पक्का इरादा कर लिया है तो बेशक अल्लाह तआ़ला** (उन की क़समों को भी) **सुनते हैं** (और उनके इस पक्के इरादे को भी) **जानते हैं(227)।**

नोटः- बीवी के पास न जाने की क़सम खा लेना शरीअ़त में इस क़सम को ईला कहते हैं। और क़सम तोड़ने पर कफ़्फ़ारा देना भी ज़रूरी है।

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ
كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ
الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌ ۢ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ ۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا
تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ
زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ
يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

आयत न० 228 से 230

और तलाक़ दी हुई औ़रतें अपने आप को निकाह से रोके रक्खें तीन महावारी होने तक (इसको इद्दत कहते हैं), **और उन औ़रतों को यह बात हलाल नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ उन के पेट में पैदा किया हो** (वो चाहे बच्चा हो या महावारी) **उस को छुपाएं** (क्योंकि उसके छुपाने से इद्दत का हिसाब ग़लत हो जाएगा) **अगर वो** (औ़रतें) **अल्लाह तआ़ला पर और आख़रत के दिन पर यक़ीन रखती हैं, और उन** (औ़रतों) **के शौहर उन को** (बिना नये निकाह के) **लौटाने का हक़ रखते हैं** (जब कि उन को तलाक़ रजई दी हो ओर इस लौटाने को रूजअ़त कहते हैं और इस का बयान आगे आता है) **शर्त यह है कि लौटा कर सुलूक से रहना चाहते हों** (वर्ना लौटाना बेकार है), **और औरतों के हक़** (मर्दों के ज़िम्मे ऐसे ही) **हैं जैसे कि मर्दों के हक़ उन के ज़िम्मे**

हैं दस्तूर के मुवाफ़िक़, और (हक़ दोनों का बराबर होने के बावजूद) मर्दों का दर्जा औ़रतों से बढ़ा हुआ है (इसलिए औरतों को मर्दों का कहना मानना चाहिए और अगर औरतों से कोई ग़लती हो तो मर्दों को सहार से काम लेना चाहिए), और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त (ताक़त वाले) हिकमत वाले हैं (कि ज़बरदस्त होते हुए बन्दों की ग़लतियों को मुआफ़ करते रहते हैं)(228) तलाक़ (रजई) दो बार की है (दो बार देने के बाद दो रास्ते हैं) एक यह कि (इद्दत के अन्दर) लौटा करके औ़रत को क़ाइदे से रख ले (दूसरे यह कि लौटाए नहीं) इद्दत पूरी होने दे इस तरह अच्छे तरीक़े से उस को छोड़ दे, और (ऐ शौहरों) तुम्हारे लिए यह बात हलाल नहीं कि बीवियों को छोड़ने के वक़्त उन से कुछ भी लो चाहे वो लिया हुआ उसी माल में से क्यों न हो जो तुम ने महर में उन को दिया था एक सूरत मगर हलाल है (वो यह) कि कोई मियां बीवी ऐसे हों कि दोनों को डर हो कि एक दूसरे का हक़ अदा करने में अल्लाह के हुक्म को पूरा न कर सकेंगे, अगर तुम (मियां बीवी) को यह डर हो कि अल्लाह के हुक्म को पूरा न कर सकेंगे तो दोनों पर कोई गुनाह न होगा (उस माल के लेने देने में) जिस को देकर औ़रत ख़ुद को आज़ाद करा ले (शर्त यह है कि वो महर से ज़्यादा न हो), ये सब अल्लाह (के हुक्मों) की हदें हैं तुम इन से बाहर न निकलना, और जो आदमी अल्लाह की हदों (को तोड़ कर उन) से बाहर निकल जाए तो ऐसे लोग अपना ही नुक़सान करने वाले हैं(229) फिर अगर (शौहर दो के बाद कोई) तीसरी तलाक़ भी देदे तो फिर वो औ़रत इस तीसरी तलाक़ देने के बाद उस आदमी के लिए हलाल न होगी जब तक वो उस शौहर के सिवा दूसरे आदमी के साथ (इद्दत के बाद) निकाह न करे, फिर अगर यह दूसरा शौहर उस को तलाक़ देदे (और उस की इद्दत भी पूरी हो जाए) तो उन दोनो पर इसमें कोई गुनाह नहीं कि दोबारा आपस में निकाह करके फिर उसी तरह मिल जाएं शर्त यह है कि दोनों को अपने ऊपर यह भरोसा हो कि आगे से अल्लाह तआ़ला की बान्धी हुई हदों पर रहेंगे, और ये अल्लाह की बान्धी हुई हदें हैं (जिन को अल्लाह तआ़ला) जानने वालों के लिए बयान करते हैं(230)।

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّ لَا تُمْسِكُوْهُنَّ
ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَ لَا تَتَّخِذُوْۤا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ وَ مَاۤ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَ الْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ۝۲۳۱

وَ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَ اَطْهَرُ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۲﴾

आयत न० 231 से 232

और जब तुम ने औरतों को तलाक़ (रजई यानी एक या दो तलाक़) **दी हो फिर वो अपनी इद्दत पूरी करने के पास पहुंच जाएं तो तुम उन को भले तरीक़े से** (लौटा कर) **निकाह में रहने दो या भले तरीक़े से उन को आज़ाद कर दो, और उन को सताने के लिए मत रोको इस इरादे से कि उन पर ज़ुल्म किया जाए, और जो आदमी ऐसा बरताव करेगा तो वो अपना ही नुक़सान करेगा, और अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को** (यानी निकाह व तलाक़ को) **खेल न बनाओ, और अल्लाह तआ़ला की जो तुम पर नेमतें हैं उन को याद करो और ख़ास कर किताब व हिकमत** (यानी सुन्नत) **की बातों को जो अल्लाह तआ़ला ने तुम पर नसीहत के लिए उतारी हैं, और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और यक़ीन रक्खो कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं(231) और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ देदो और** (वो) **औरतें अपनी इद्दत पूरी कर चुकें तो** (ऐ मैके वालो) **तुम उन को इस बात से मत रोको कि वो अपने** (पसन्द किये हुए) **शौहरों से निकाह करलें जब कि आपस में सब भले तरीक़े से राज़ी हो जाएं, यह नसीहत उस आदमी को की जाती है जो तुम में से अल्लाह तआ़ला और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखता हो, इस नसीहत को मान लेना तुम्हारे लिए ज़्यादा सफ़ाई और ज़्यादा पाकी की बात है, और अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारी भलाई को) **जानते हैं तुम नहीं जानते(232)।**

नोटः- बेवा औ़रत की तरह तलाक़ दी हुई औरत को भी निकाह से रोकना मना है।

وَ الْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَ عَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَ
كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَ لَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَ عَلَى
الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَ تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَ اِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ
تَسْتَرْضِعُوْۤا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّاۤ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا

تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٣﴾ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ
فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنتُمْ فِي أَنفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ
سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِن لَّا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَن تَقُولُوا قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ
الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٣٥﴾

आयत न० 233 से 235

और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाया करें (यह मुद्दत उसके लिए है) **जो दूध पिलाने का वक़्त पूरा करना चाहे, और जिस बाप का** (वो) **बच्चा है उस के ज़िम्मे है उन माओं का खाना कपड़ा दस्तूर के मुवाफ़िक़, और किसी आदमी को उस की सहार से ज़्यादा हुक्म नहीं दिया जाता, किसी मां को तकलीफ़ न पहुंचाना चाहिए उसके बच्चे की वजह से और न किसी बाप को तकलीफ़ देनी चाहिए उस के बच्चे की वजह से, और** (अगर बाप ज़िन्दा न हो तो बच्चे का पालना) **उसके नज़दीकी रिश्तेदार के ज़िम्मे है** (यानी जो शरीअ़त से बच्चे का वारिस होने का हक़ रखता है)**, फिर यह समझलो कि अगर दोनो** (यानी मां बाप) **दो साल से कम में दूध छुड़ाना चाहें आपसी राज़ी और मशवरे से तो भी उन दोनो पर किसी क़िस्म का गुनाह नहीं, और अगर तुम लोग** (मां बाप के होते हुए भी किसी वजह से) **अपने बच्चों को किसी और अन्ना का दूध पिलाना चाहो तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं जब कि उन को** (यानी दूध पिलाने वाली को) **अदा कर दो जो कुछ उन को देना तय किया है दस्तूर के हिसाब से, और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और यक़ीन रक्खो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को अच्छी तरह देख रहे हैं(233) और जो लोग तुम में मर जाते हैं और बीवियां छोड़ जाते हैं वो बीवियां अपने आप को** (निकाह व दूसरी बातों से) **रोके रक्खें चार महीने और दस दिन, फिर जब अपने** (इद्दत के) **दिनों को पूरा करलें तो तुम को** (भी) **कुछ गुनाह न होगा ऐसी बात** (के जाइज़ रखने) **में कि वो औ़रतें अपने बारे में कुछ कार्रवाई** (निकाह की) **करें दस्तूर के मुवाफ़िक़** (लेकिन अगर कोई बात शरीअ़त के ख़िलाफ़ करें और तुम रोक सकने के बावजूद न रोकोगे तो तुम को भी गुनाह होगा)**, और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखते हैं(234) और इसमें तुम को कुछ गुनाह नहीं कि उन औ़रतों के लिए इशारे से निकाह की बात करो**

या अपने दिल में (उस बात को) **छुपाए रक्खो, अल्लाह तआ़ला जानते हैं कि तुम उन औ़रतों का ज़िक्र करोगे लेकिन उन से निकाह का वादा न करो छुप कर मगर यह कि कह दो कोई बात शरीअ़त के मुवाफ़िक़, और** (उनसे) **निकाह करने का** (उस वक़्त तक) **इरादा** (भी) **न करो जब तक कि इद्दत पूरी न हो जाए, और जान लो कि अल्लाह तआ़ला को पता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है तो उससे** (यानी अल्लाह तआ़ला से) **डरते रहो, और जान लो कि अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाले और सहार वाले हैं** (पिछली ग़लती मुआ़फ़ कर देंगे)(235)।

नोटः- शौहर की मौत के बाद औ़रत की इद्दत चार महीने दस दिन है अगर चान्द की पहली तारीख़ में शौहर की मौत हुई तो महीनों का हिसाब लगाएंगे चाहे 29 दिन के हों या 30 दिन के वर्ना 130 दिन पूरे किये जाएंगे।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّ مَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ
قَدَرُهٗ وَ عَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾ وَ اِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تَمَسُّوْهُنَّ وَ قَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ
النِّكَاحِ ؕ وَ اَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

आयत न० 236 से 237

तुम्हारे ज़िम्मे कुछ (महर) **नहीं अगर बीवियों को ऐसी हालत में तलाक़ देदो कि तुम ने उन को** (अभी) **छुवा भी नहीं** (यानी विदाई नहीं हुई) **और न उन के लिए कुछ महर तय किया है** (तो इस सूरत में महर अपने ज़िम्मे मत समझो), **और** (सिर्फ़) **उन को** (एक) **फ़ाइदा पहुंचाओ गुन्जाइश दार के लिए उस की हैसियत के हिसाब से और ग़रीब के लिए उस की हैसियत के हिसाब से है एक ख़ास क़िस्म का फ़ाइदा पहुंचाना जो क़ाइदे के मुवाफ़िक़ वाजिब है नेकी करने वालों पर** (यानी सब मुसलमानों पर और मुराद इससे एक जोड़ा कपड़ों का देना है)(236) **और अगर तुम उन बीवियों को तलाक़ दो इससे पहले कि उन को हाथ लगाओ** (यानी विदाई और मिलाप से पहले) **और उनके लिए कुछ महर भी ठहरा चुके थे तो इस सूरत में जितना महर तुम ने तय किया हो उस का आधा** (वाजिब) **है** (और आधा मुआ़फ़) **मगर** (दो सूरतें इससे अलग हैं एक तो) **यह कि वो औ़रतें** (अपना आधा भी) **मुआ़फ़ कर दें** (तो इस सूरत में आधा भी वाजिब

न रहा) **या** (दूसरी सूरत) **यह** (है) **कि वो आदमी महरबानी करदे जिसके हाथ में निकाह का बाक़ी रखना** (और तोड़ना) **है** (यानी शौहर, वो अगर पूरा ही महर उस पर छोड़ दे तो उस की मर्ज़ी), **और** (हक़ वालो) **तुम्हारा** (अपने हक़ों को) **मुआफ़ कर देना** (वुसूल करने के मुक़ाबिले) **परहेज़गारी से ज़्यादा नज़दीक** (है क्योंकि मुआफ़ करने से सवाब मिलता) **है, और आपस में अहसान** (और महरबानी) **करने का मौक़ा मत चूको** (बल्कि हर आदमी दूसरे के साथ हमदर्दी करने का ध्यान रक्खा करे), **बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों को अच्छी तरह देखते हैं** (तो तुम अगर किसी के साथ हमदर्दी व अहसान करोगे अल्लाह तआला उस का अच्छा बदला तुम को देंगे)(237)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि निकाह पूरा हो जाने के बाद उस को बाक़ी रखना शौहर का काम है यानी शौहर तलाक़ दे सकता है औरत तलाक़ नहीं दे सकती।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿۲۳۸﴾ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ
فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۳۹﴾

आयत न० 238 से 239

हिफ़ाज़त करो सब नमाज़ों की (यानी सब नमाज़ों का ध्यान रक्खो) **और** (ख़ास कर) **बीच वाली नमाज़** (यानी अ़स्र की नमाज़) **की, और** (नमाज़ में) **खड़े हुआ करो अल्लाह के सामने अदब से(238) फिर अगर तुम को** (क़ाइदे से नमाज़ पढ़ने में किसी दुशमन का) **ख़तरा हो तो खड़े- खड़े या सवारी पर चढ़े-चढ़े** (जिस तरह बन सके चाहे क़िबले की तरफ़ मुंह भी न हो और चाहे रूकू व सजदे सिर्फ़ इशारे ही से हो सकें) **पढ़ लिया करो** (इस हाल में भी इस की हिफ़ाज़त रक्खो इस को मत छोडो), **फिर जब तुम अमन की हालत में आ जाओ** (और ख़तरा टल जाए) **तो तुम अल्लाह तआला की याद** (यानी नमाज़) **उस तरीक़े से अदा करो जो तुम को** (अमन की हालत में) **सिखाया है जिस को तुम** (पहले से) **न जानते थे(239)।**

नोटः- इस से यह भी मालूम हुआ कि नमाज़ कितनी ज़रूरी चीज़ है।

وَ الَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَ يَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ
خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۴۰﴾ وَ لِلْمُطَلَّقٰتِ

مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۴۱﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۲۴۲﴾

आयत न० 240 से 242

नोटः- बीच में नमाज़ की नसीहत की गई फिर तलाक़ के बयान पर लौट आए।

और जो लोग मर जाएं तुम में से और छोड़ जाएं बीवियों को (उनके ज़िम्मे ज़रूरी है कि) **वो वसीयत कर जाया करें अपनी बीवियों के वास्ते एक साल तक** (ख़र्च और घर में रहने) **का फ़ाइदा उठाने की इस तरह कि वो घर से न निकाली जाए, हां अगर** (इद्दत पूरी होने के बाद) **अपने आप चली जाएं तो तुम को कोई गुनाह नहीं उस क़ाइदे की बात में जिसको वो अपने बारे में चुनें** (जैसे निकाह और यह हुक्म उस वक़्त का है जब तक औ़रतों का मीरास में हिस्सा न रक्खा गया था)**, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं** (सो उनके हुक्म के ख़िलाफ़ मत करो) **और हिकमत वाले हैं** (कि तमाम हुक्मों में तुम्हारी भलाई रक्खी है चाहे तुम्हारी समझ में न आए)(240) **और सब तलाक़ दी हुई औ़रतों के लिए कुछ कुछ फ़ाइदा पहुंचाना** (किसी दर्जे में रक्खा है) **दस्तूर के मुवाफ़िक़,** (और यह) **रक्खा हुआ है उन पर** (जो शिर्क व कुफ़्र से) **परहेज़ करते हैं** (यानी मुसलमानों पर)(241) **इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम्हारे** (अ़मल करने के) **लिए अपने हुक्म बयान करते हैं ताकि तुम** (उन को) **समझो** (और अमल करो)(242)।

नोटः- जब दूसरी आयत आगई और मीरास में औरत का हिस्सा तय कर दिया गया तो यह एक साल तक ख़र्चे देने का हुक्म बदल गया।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۫ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿۲۴۳﴾ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۴۴﴾

आयत न० 243 से 244

क्या आप ने उन लोगों के क़िस्से को नहीं देखा (यानी यह क़िस्सा तो मशहूर है कि) **जो अपने घरों से मौत के डर से निकल खड़े हुए थे और वो हज़ारों थे बस कह दिया उन को अल्लाह तआ़ला ने कि मर जाओ** (बस वो सब मर गये) **फिर** (एक मुद्दत के बाद) **उन को ज़िन्दा**

कर दिया, बेशक अल्लाह तआ़ला लोगों पर बड़ी महरबानी करने वाले हैं (कि लोगों के लिए इस क़िस्से को सबक़ बना दिया) **मगर इसके बावजूद अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते** (कि इससे सबक लें और अल्लाह के हुक्म पर जिहाद करें)(243) **और जंग करो अल्लाह की राह में** (और मौत से मत डरो कि वो अपने वक़्त पर आएगी) **और जान लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारी सब बातें) **सुनने वाले** (और) **जानने वाले हैं**(244)।

नोटः- इस क़िस्से को सुनाने का मतलब यह है कि जिहाद को मौत या इससे भागने को बचाव न समझो बल्कि अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पूरा करके दोनों जहान की कामयाबी हासिल करो।

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَہٗ لَہٗۤ اَضْعَافًا کَثِیْرَۃً ؕ وَاللّٰہُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ ۪ وَ اِلَیْہِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۴۵﴾

आयत न० 245

कौन आदमी है (ऐसा) **जो अल्लाह तआ़ला को क़र्ज़ दे अच्छी तरह क़र्ज़ देना** (यानी अच्छी नीयत के साथ नेक कामों में ख़र्च करे) **फिर अल्लाह तआ़ला उस** (क़र्ज़ के सवाब) **को बढ़ा कर कई गुना करदे, और** (इस का डर मत करो कि ख़र्च करने से माल कम हो जाएगा क्योंकि यह तो) **अल्लाह तआ़ला** (ही के बस में है वो ही) **कमी करते हैं और** (वो ही) **बढ़ोतरी करते हैं** (कुछ ख़र्च करने न करने पर इस का दारोमदार नहीं), **और तुम उसी की तरफ़** (मरने के बाद) **ले जाए जाओगे** (तो उस वक़्त नेक कामों में ख़र्च करने का अच्छा बदला और ज़रूरी मौक़े पर ख़र्च न करने की सज़ा तुम को मिलेगी)(245)।

اَلَمْ تَرَ اِلَی الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰی ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِیٍّ لَّھُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِکًا نُّقَاتِلْ فِیْ سَبِیْلِ
اللّٰہِ ؕ قَالَ ھَلْ عَسَیْتُمْ اِنْ کُتِبَ عَلَیْکُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَ مَا لَنَاۤ اَلَّا نُقَاتِلَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَ قَدْ
اُخْرِجْنَا مِنْ دِیَارِنَا وَ اَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا کُتِبَ عَلَیْھِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْھُمْ ؕ وَاللّٰہُ عَلِیْمٌۢ بِالظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۴۶﴾
وَ قَالَ لَھُمْ نَبِیُّھُمْ اِنَّ اللّٰہَ قَدْ بَعَثَ لَکُمْ طَالُوْتَ مَلِکًا ؕ قَالُوْۤا اَنّٰی یَکُوْنُ لَہُ الْمُلْکُ عَلَیْنَا وَ نَحْنُ اَحَقُّ
بِالْمُلْکِ مِنْہُ وَ لَمْ یُؤْتَ سَعَۃً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰہَ اصْطَفٰہُ عَلَیْکُمْ وَ زَادَہٗ بَسْطَۃً فِی الْعِلْمِ وَ
الْجِسْمِ ؕ وَاللّٰہُ یُؤْتِیْ مُلْکَہٗ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰہُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۴۷﴾ وَ قَالَ لَھُمْ نَبِیُّھُمْ اِنَّ اٰیَۃَ مُلْکِہٖۤ اَنْ یَّاْتِیَکُمُ
التَّابُوْتُ فِیْہِ سَکِیْنَۃٌ مِّنْ رَّبِّکُمْ وَ بَقِیَّۃٌ مِّمَّا تَرَکَ اٰلُ مُوْسٰی وَ اٰلُ ھٰرُوْنَ تَحْمِلُہُ الْمَلٰٓئِکَۃُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٨﴾ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ
مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا
مِّنْهُمْ ۭ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ
اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٢٤٩﴾ وَلَمَّا بَرَزُوْا
لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٥٠﴾
فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۣ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَاۗءُ ۭ وَلَوْلَا دَفْعُ
اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ
نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

आयत न० 246 से 252

क्या आप को बनी इस्राईल की क़ौम का क़िस्सा जो मूसा (अ़लैहिस्सलाम) **के बाद हुआ था पता नहीं चला** (जिससे पहले उन पर काफ़िर जालूत हावी आ चुका था और उनके मुल्क के कुछ हिस्से दबा लिए थे), **जब कि उन लोगों ने अपने एक पैग़म्बर से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह तय कर दीजिए कि हम** (उसके साथ होकर) **अल्लाह के रास्ते में** (जालूत से) **जंग करें, उन पैग़म्बर ने कहा कि यह शक है कि अगर तुम को जिहाद का हुक्म दिया जाए तो तुम** (उस वक़्त) **जिहाद न करो, वो लोग कहने लगे कि हमारे वास्ते ऐसी कौन सी वजह होगी कि हम अल्लाह की राह में जिहाद न करें जब कि हम उन काफ़िरों के हाथों अपने घरों और अपने बेटों से बिछुड़ने पर मजबूर कर दिये गये** (क्योंकि उन के कुछ शहर भी काफ़िरों ने दबा लिए थे और उन की औलाद को भी क़ैद कर लिया था), **फिर** (ऐसा ही हुआ) **जब उन लोगों को जिहाद का हुक्म हुआ तो सिवाए कुछ लोगों के** (बाक़ी) **सब फिर गये** (जैसा कि आगे आता है), **और अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों** (यानी हुक्म न मानने वालों) **को अच्छी तरह जानते हैं** (सब को सही सज़ा देंगे)(246) **और उन लोगों से उन के पैग़म्बर ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने तुम पर तालूत को बादशाह बना दिया, कहने लगे उन को हम पर हुकूमत का हक़ कैसे हो सकता है जब कि उन के मुक़ाबिले हम हुकूमत के ज़्यादा हक़दार हैं और वो** (तो) **कुछ मालदार भी नहीं** (क्योंकि तालूत ग़रीब आदमी थे), **उन पैग़म्बर ने** (जवाब में) **कहा कि** (एक तो) **अल्लाह**

तआ़ला ने तुम्हारे मुक़ाबिले में उन को चुना है (और क्यों चुना इस को अल्लाह तआ़ला अच्छी तरह जानते हैं) **और** (दूसरे सियासत व हुकूमत का) **इल्म और जिस्म** (ताक़त में) **उन को ज़्यादा दिया है, और** (तीसरे) **अल्लाह तआ़ला** (मालिक हैं) **अपना मुल्क जिस को चाहे दें** (उन से कोई सवाल का हक़ नहीं रखता)**, और** (चौथे) **अल्लाह तआ़ला** (माली) **गुन्जाइश देने वाले हैं** (उन को माल देना क्या मुश्किल है, और) **जानने वाले हैं** (कि कौन हुकूमत के क़ाबिल है)(247) **और** (जब उन्होंने इसके लिए निशानी मांगी तो उस वक़्त) **उन से उनके पैग़म्बर ने कहा कि** (अल्लाह की तरफ़ से उन के) **बादशाह होने की निशानी ये है कि तुम्हारे पास वो सन्दूक़** (बिना तुम्हारे लाए हुए) **आ जाएगा जिसमें तसल्ली** (और बरकत) **की चीज़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से** (यानी तौरेत) **और कुछ बची हुई चीज़ें हैं जिन को** (हज़रत) **मूसा व** (हज़रत) **हारून** (अ़लैहिमुस्सलाम) **छोड़ गये हैं** (यानी उन के कुछ कपड़े) **उस सन्दूक़ को फ़रिशते ले आएंगे, इस** (तरह के सन्दूक़ के आजाने) **में तुम लोगों के वास्ते पूरी निशानी है अगर तुम यक़ीन लाने वाले हो**(248) **फिर जब** (बनी इस्राईल ने तालूत को बादशाह मान लिया और जालूत के मुक़ाबिले के लिए लोग जमा हो गये, और) **तालूत फ़ौजों को लेकर चले तो उन्होंने** (अपने साथी पैग़म्बर की वही के वास्ते से पूछ करके साथियों से) **कहा कि अब अल्लाह तआ़ला** (वक़्त पर जमे रहने या न रहने में) **तुम्हें आज़माएंगे एक नहर के वास्ते से** (जो रास्ते में आएगी और वहां पर प्यास की सख़्ती होगी) **तो जो आदमी उससे** (पेट भर कर) **पानी पिएगा वो तो मेरे साथियों में नहीं, और जो उसमें से बिल्कुल न पिये** (और असल हुक्म ये ही है) **वो मेरे साथियों में है लेकिन जो आदमी अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले** (तो इतनी छुट्टी है)**, तो सब ने इससे** (ख़ूब) **पीना शुरू कर दिया मगर थोड़े से आदमी उनमें से** (रूके किसी ने बिल्कुल न पिया होगा किसी ने चुल्लू से ज़्यादा न पिया होगा)**, तो जब तालूत और जो मुसलमान उनके साथ थे नहर से पार उतर गये** (और अपने लोगों को देखा तो थोड़े से आदमी रह गये उस वक़्त कुछ आदमी आपस में) **कहने लगे कि आज तो** (हम इतने कम हैं कि ऐसे में) **हम में जालूत और उस की फ़ौज के मुक़ाबिले की ताक़त दिखाई नहीं देती,** (यह सुन कर) **ऐसे लोग जिन को ध्यान था कि वो अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होने वाले हैं कहने लगे कि बहुत बार बहुत सी छोटी छोटी टुकड़ी बड़ी बड़ी फ़ौजों पर अल्लाह के हुक्म से कामयाब हो जाती हैं** (असल चीज़ पैर जमाए रखना है)**, और अल्लाह तआ़ला सब्र** (के साथ जमे रहने) **वालों का साथ देते हैं**(249) **और जब ये लोग जालूत और उस की फ़ौजों के सामने मैदान में आगये तो** (दुआ़ में अल्लाह तआ़ला से) **कहने लगे कि हमारे रब हम पर** (यानी

हमारे दिलों पर) **सब्र उतार दीजिए** (यानी मज़बूती दीजिए) **और** (मुक़ाबिले के वक़्त) **हमारे पैर जमाए रखिए और हम को इस काफ़िर क़ौम के मुक़ाबिले कामयाबी दीजिए(250) फिर तालूत वालों ने जालूत वालों को अल्लाह के हुक्म से हरा दिया, और दाऊद** (अलैहिस्सलाम ने जो कि तालूत की फ़ौज में थे और उस वक़्त तक नबी न हुए थे उन्हों) **ने जालूत को क़त्ल कर दिया** (और कामयाब वापस हुए) **और** (उसके बाद) **उन को** (यानी दाऊद अ़लैहिस्सलाम को) **अल्लाह तआ़ला ने हुकूमत और हिकमत** (यानी पैग़म्बरी) **दी और जो चाहा उन को सिखाया** (जैसे बिना औज़ार के ज़रह बनाना, जानवरों की बोली समझना)**, और अगर यह बात न होती कि अल्लाह तआ़ला कुछ लोगों को** (यानी फ़साद करने वालों को) **कुछ लोगों के** (यानी सुधार करने वालों के) **वास्ते से** (कभी-कभी) **हटाते रहते तो दुनिया में फ़ितना फ़साद फैल जाता लेकिन अल्लाह तआ़ला बड़ी महरबानी करने वाले हैं दुनिया जहान वालों पर** (इसलिए कभी-कभी इस तरह सुधार करते रहते हैं)(251) **ये** (आयतें जिन में यह क़िस्सा बयान हुआ) **अल्लाह तआ़ला की आयतें हैं जो ठीक-ठीक हम तुम को पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं, और** (इससे साबित होता है कि) **आप बेशक पैग़म्बरों में से हैं**(252)।

नोटः- इस क़िस्से की सही-सही ख़बर देना जब कि आप ने न कहीं पढ़ा न किसी से सुना, न देखा तो यह आप का मोजिज़ा है जो आप की पैग़म्बरी की निशानी है।